# हँसती दुनिया

* वर्ष 46 * अंक 9 * सितम्बर 2019

₹15/-

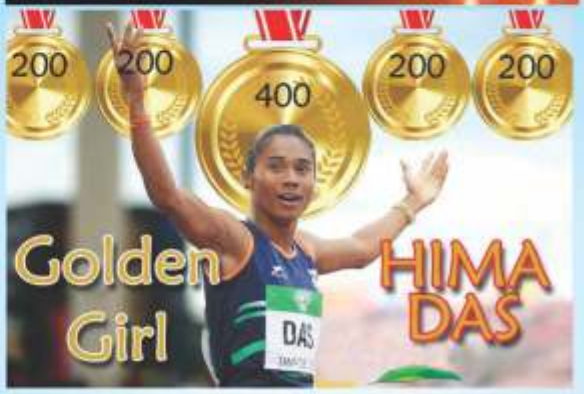

# हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 9 • सितम्बर 2019 • पृष्ठ 52

**बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका**

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कॉलोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।



**मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद**

सम्पादक — **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक — **सुभाष चन्द्र**

**Ph.:** 011-47660200
**Fax:** 01127608215
**Email:** editorial@nirankari.org
**Website:** http//www.nirankari.org


सदस्यता शुल्क

| देश | 1 वर्ष | 3 वर्ष | 5 वर्ष | 11 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| भारत/नेपाल | ₹ 150 | ₹ 400 | ₹ 700 | ₹ 1500 |
| यू.के. | £15 | £40 | £70 | £150 |
| यूरोप | €20 | €55 | €95 | €200 |
| अमेरिका | $25 | $70 | $120 | $250 |
| कनाडा/आस्ट्रेलिया | $30 | $85 | $140 | $300 |

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

## स्तम्भ


4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
9. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले


## चित्रकथाएं


13. दादा जी
34. किट्टी

## कविताएं


7. प्रार्थना
: संजय कुमार चतुर्वेदी

7. दुनिया की शान बढ़ाते
: जगमोहन 'सजग'

17. दो बाल कविताएं
: हरजीत निषाद

24. साक्षरता संवाद
: रूपनारायण काबरा

25. बादल से दो बात
: रूपनारायण काबरा

39. अच्छे बच्चे
: सुदीप

39. प्यारे फूल
: दिनेश दर्पण

43. राष्ट्र की आवाज
: राधेलाल 'नवचक्र'

50. चन्द्रयान की चमक
: हरजीत निषाद


## विशेष/लेख


8. भारत की गौरव धावक...
: हरजीत निषाद

18. नीम
: अभय कुमार जैन

23. पहेलियां
: राधा नाचीज

24. उपयोगी हैं पुस्तकें
: डॉ. जमनालाल बायती

27. बिल्ली मछली
: डॉ. परशुराम शुक्ल

32. ....पहला पुस्तकालय?
: दिनेश दर्पण

33. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल

42. एक विशाल जीव : हिप्पो
: विभा वर्मा


## कहानियां


10. फैसला
: जाकिर अली

21. सफलता का रहस्य
: सीताराम गुप्ता

26. धमकी से न डरने वाले
: अर्चना सौगानी

29. सुन्दरता का घमण्ड
: गोविन्द भारद्वाज

40. मर गया सांप
: साबिर हुसैन

46. ठगी महंगी पड़ी
: दीपांशु जैन

# शिक्षा को आचरण में लाएं

**हम** सुबह से रात्रि तक कुछ न कुछ कार्य करते रहते हैं। उस कार्य को करते-करते हम यह समझ बैठते हैं कि अमुक कार्य मैंने किया है जबकि कार्य करने के लिए अनेकों साधनों जैसे शिक्षा का, विज्ञान का, समाज का योगदान होता है। कुछ चीजें हम सीखना चाहते हैं और कुछ हमें स्वयं ही आनी शुरू हो जाती हैं। जिस भी क्षेत्र में हमारी रुचि होती है, वहाँ हमारा ध्यान स्वभावतः ही पहुँच जाता है और उस क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करने तथा उसमें श्रेष्ठ बनने के लिए प्रयास भी करते हैं।

जिस ज्ञान की हमें जानकारी नहीं है और उसे हम जब किसी से भी प्राप्त करते हैं या जो हमें उस विषय की जानकारी देता है उसे हम शिक्षक कहते हैं।

जन्म से लेकर जीवन के अन्तिम समय तक शिक्षा प्राप्त करने का क्रम निरन्तर चलता रहता है। हम जब शिशु होते हैं, उस समय हम अपने बड़ों के, माता-पिता के, बहन-भाई और आसपास के मिलने वालों के द्वारा उनके व्यवहार से, भाव-दशा से बहुत कुछ सीखने लगते हैं। कौन हमें प्यार से देख रहा है? कौन हमें दुलार रहा है? आदि-आदि। धीरे-धीरे हम बोलना सीख जाते हैं। यह भी हम अपने बड़ों से ही सीखते हैं, यहाँ तक कि चलना सीखते हैं तब भी हमें किसी सहारे की आवश्यकता होती है।

बच्चे समय के साथ-साथ बड़े होने लगते हैं। वे दौड़ने-भागने लगते हैं, पढ़ने-लिखने लगते हैं। अब वे अपने से छोटे बच्चों के चलने में, बोलने में उनकी सहायता करने लगते हैं और उनको छोटी-छोटी बातों को समझाने लगते हैं, उस समय वे बड़े बच्चे भी शिक्षक का कार्य कर रहे होते हैं। इस प्रकार शिक्षा के हस्तांतरण की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।

प्यारे साथियों! यह बोल-चाल, पढ़ना-लिखना, भागना-दौड़ना, स्वस्थ रहना अथवा पेट भरना आदि सब कुछ व्यक्ति समय-समय पर सीखता रहता है परन्तु शिक्षा की कोई सीमा नहीं है। इस सृष्टि की समस्त वस्तुओं से, प्राणियों से कुछ न कुछ अवश्य सीखा जा सकता है। सूर्य हमें प्रकाश देता है। उसकी ऊर्जा से हमारा जीवन चलता है। चन्द्रमा से शीतलता प्राप्त होती है। धरती पर हम चलते हैं, मकान बनाते हैं। यह हमारा भार सहन करती है। वायु से हमारे स्वास चलते हैं। पेड़-पौधे हमें ऑक्सीजन देते हैं। खाने-पीने का माध्यम बनते हैं। फिर भी ये किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखते। यह सभी हमारे लिए प्रकृति ने बनाएं हैं। यह भी हमारे शिक्षक हैं।

पाँच सितम्बर को भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन है। वे भी एक शिक्षक थे। उन्हीं की याद में हम शिक्षक दिवस को बड़ी श्रद्धा एवं आदर से मनाते हैं। हम अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। इनके साथ-साथ हमें प्रकृति के समस्त प्राणियों, जीवों और साधनों के प्रति भी सम्मान एवं आभार प्रकट करना है जिससे हम सभी ने कुछ न कुछ अवश्य सीखा और ग्रहण किया है। यह तभी सार्थक होगा और इसकी उपयोगिता तभी होगी जब हम केवल आदर, सम्मान एवं आभार तक सीमित न रहकर इनके द्वारा जो शिक्षा मिली, सीखने को मिला उसे हम अपने आचरण में लाएं जिससे बाकी लोग भी इसका अनुसरण कर सकें।

*– विमलेश आहूजा*

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

# सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

**पद संख्या : 207**

धोबी कपड़े धोवण लगयां मैल कदे वी तकदा नहीं।
गुनाहगार नूं बख़्शण लगयां बख़्शणहारा थकदा नहीं।
सत्गुर पूरा कदे गुनाहां दे वल पान्दा झात नहीं।
सत्गुर दे लई छोटी वड्डी उच्ची नीवीं ज़ात नहीं।
सत्गुर देन्दा दात इलाही जो वी सीस झुकान्दा ए।
कहे अवतार ओह इक छिन अंदर रमे राम नूं पान्दा ए।

**भावार्थ :** उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि सद्गुरु बहुत दयालु हैं और इनकी दया सब पर समान रूप से बरसती रहती है। जिस प्रकार धोबी के पास जो कपड़े धुलने के लिए आते हैं, धोबी उन कपड़ों की मैल को धोकर साफ कर देता है। धोबी को यह पता होता है कि कपड़े अगर मैले न होंगे तो उन्हें उसके पास पहुँचाया ही नहीं जाएगा।

इसी प्रकार एक गुनाह करने वाला इन्सान भले ही गुनाहगार है लेकिन बख्शने वाला, क्षमा करने वाला दया करके पलभर में उस गुनाहगार के गुनाहों को बख्श देता है। इन्सान गुनाह करते नहीं थकता तो बख्शनहार सद्गुरु भी बख्शते हुए नहीं थकता। पूरा सद्गुरु गुनाहगार के गुनाहों की ओर नजर ही नहीं डालता और पलभर में बख्श कर उसें एक नई पाक-पवित्र जिन्दगी दे देता है।

गुनाह बख्शते समय सद्गुरु यह नहीं देखता कि वह छोटी जाति वाला है या बड़ी जाति वाला। सद्गुरु की नजर में ऊँची-नीची जाति का कोई भेदभाव होता ही नहीं, वह एक प्रभु की सभी सन्तानों के प्रति समता वाला भाव रखकर उनके गुनाह बख्शता जाता है। यदि सद्गुरु ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, छोटे-बड़े और पापी (अपराधी) और निरअपराधी का भेद करने लगे तो संसार का कोई भी इन्सान बख्शा ही नहीं जा सकेगा क्योंकि हर इन्सान में कोई न कोई कमी तो होती ही है। कई बार तो उसका दामन गुनाहों से पूरी तरह भरा हुआ भी होता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सद्गुरु के पास ईश्वरीय ज्ञान रूपी सौगात होती है। सद्गुरु इन्सान को परमात्मा के दर्शन करा कर उसे परमात्मा के साथ जोड़ देने की क्षमता रखता है। छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब किसी भी जाति धर्म से सम्बन्ध रखने वाला इन्सान जब सद्गुरु के आगे शीश झुकाकर याचना करता है कि मुझे बख्श दो, मुझे प्रभु से मिला दो तो सद्गुरु पलभर में ही इलाही दात (ब्रह्मज्ञान) देकर उसकी खाली झोली भर देता है। उसके दुखों से भरे जीवन को खुशियों से भर देता है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि सद्गुरु के चरणों में सिर झुकाने वाला इन्सान पलभर में रमे-राम को पा जाता है। यह अविनाशी राम जो रोम-रोम में रम रहा है, जो कण-कण में व्याप्त है जो जगत को बनाकर चलाने वाला है, जो सबका पालन करने वाला है, इसको अपने अंग-संग पाकर इन्सान का जीवन सार्थक हो जाता है। वह हर प्रकार के भेदभाव से ऊपर उठकर सुन्दर और सुखद जीवन व्यतीत करने लगता है।

# अनमोल वचन

★ सेवा से सौभाग्य प्राप्त होता है।

★ बालक का भाग्य उसकी माँ द्वारा निर्मित होता है।

★ न कोई किसी का मित्र है और न कोई दुश्मन। हमारा अपना व्यवहार होता है जो मित्र या शत्रु बनाता है। – **निर्मल जोशी**

★ कठोर शब्दों में कहे गये हितकर वाक्यों को सुनकर मनुष्य रुष्ट हो जाते हैं। – **भास**

★ अगर आप अपने आपसे मित्रता कर लें तो आप कभी अकेला महसूस नहीं करेंगे।
– **मैक्सवेल माल्टज**

★ जब तक आप सामाजिक स्वतंत्रता नहीं हासिल कर लेते कानून आपको जो भी स्वतंत्रता देता है वो आपके लिए बेमानी है। – **डॉ. अम्बेडकर**

★ अगर आत्मसम्मान चाहते हो तो दूसरों का सम्मान करो। – **कठोपनिषद**

★ जब कभी मुझे अवगुण देखने की इच्छा होती है तो मैं अपने से आरम्भ करता हूँ और इससे आगे बढ़ नहीं पाता। – **डेविड ग्रेशन**

★ विजय उसकी होती है जिनको यह विश्वास होता है कि वे विजयी हो सकते हैं। – **जॉन ड्रायडन**

★ परापेकार से बढ़कर कोई पुण्य नहीं। – **वेदव्यास**

★ महान कार्यों को करने के लिए पहली जरूरत है विश्वास। – **जॉनसन**

★ कदम पीछे न हटाने वाला ही ऐश्वर्य को जीतता है। – **ऋग्वेद**

★ धैर्यवान पुरुष कार्य आरम्भ करने के बाद असफल होकर नहीं लौटते। – **कथासरितसागर**

★ पुरुष का नारी के समान कोई मित्र नहीं।
– **अब्राहम लिंकन**

★ मनुष्य के संकल्प के सम्मुख देव-दानव सभी पराजित हो जाते हैं। – **एमर्सन**

★ वही बात बोलनी चाहिए जिससे अपने को भी दु:ख न पहुँचे। – **भगवान बुद्ध**

★ समस्त भय व चिन्ता इच्छाओं का परिणाम है।
– **स्वामी रामतीर्थ**

★ सबसे अच्छा काम वह है जिससे लोगों को ज्यादा से ज्यादा आनन्द मिले। – **फ्रांसिस हैरीसन**

★ क्रोध मूर्खता से आरम्भ होता है और पश्चाताप से इसका अन्त होता है। – **पाइथागोरस**

★ सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं, जिन्हें आप जितना अधिक दूसरों पर छिड़कोगे, उतनी ही अधिक सुगन्ध आपके भीतर आयेगी।

★ विवेक जीवन का नाम और कल्पना उसकी मिठास है। एक उसको सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है।

★ जिस मनुष्य के हृदय में शीतलता निवास करती है। संसार भर में कोई मनुष्य उसकी बराबरी नहीं कर सकता।

★ सोने का प्रत्येंक धागा मूल्यवान होता है। उसी प्रकार समय का प्रत्येक क्षण भी मूल्यवान होता है। – **अज्ञात**

– **संग्रहकर्ता : रामअवध राम ( गुरैनी )**

बाल कविता : संजय कुमार चतुर्वेदी

# प्रार्थना

प्रभु जी हमको दो वरदान,
जीवन में हम बनें महान।

गुरुवर दो तुम विद्या दान,
करूँ तुम्हारा ही गुणगान।

हो न कभी मुझसे अपमान,
करूँ सदा सबका सम्मान।

रखूं देश का ऊँचा मान,
देशहित में निकलें प्राण।

वादविवाद का न हो भान,
रहें प्रेम से सब इन्सान।

बाल कविता : जगमोहन 'सजग'

# दुनिया की शान बढ़ाते

सुबह-सुबह मैदानों में,
कसरत करते जो बच्चे।
नहीं कभी बीमार वो होते,
लगते सुन्दर सच्चे।।

खुशी खुशी स्कूल जाते,
करते नित पूरा काम।
सबसे आगे सदा वे रहते,
उज्ज्वल करते नाम।।

देश दुनिया की शान बढ़ाते,
दु:ख में न घबराते।
सीख औरों को देते रहते,
कभी न वे इतराते।।

सफलता पाना हो तो बच्चों,
आलस छोड़ो।
कर्म/मर्म धर्म/धरा से,
अपना नाता जोड़ो।।

युवाओं के लिए प्रेरणा-स्रोत

# भारत की गौरव धावक हिमा दास

स्टार एथलीट **हिमा दास** ने 19 दिन (2 जुलाई 2019 से 20 जुलाई 2019 तक) के भीतर 5 गोल्ड जीत कर देश के गौरव को और भी बढ़ाया है। भारत की गोल्डन गर्ल हिमा दास 19 साल की कम उम्र में बेहद शानदार प्रदर्शन किया। पांचवां गोल्ड जीतने के बाद भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उन्हें बधाई दी और कहा– 'भारत को हिमा दास पर बहुत गर्व है। हिमा दास ने पिछले कुछ दिनों में शानदार उपलब्धियां हासिल की हैं। सभी बहुत खुश हैं कि उन्होंने विभिन्न टूर्नामेंटों में पांच पदक जीते हैं। उन्हें बधाई और उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं।'

भारतीय धावक हिमा दास ने 20 जुलाई 2019 को चेक रिपब्लिक में 400 मीटर की रेस 52.09 सेकंड में पूरी की और भारत के लिए **पांचवां गोल्ड मेडल** हासिल किया।

हिमा दास ने **पहला गोल्ड** 2 जुलाई 2019 को जीता था। हिमा ने 2 जुलाई को पोलैंड में पोजनान एथलेटिक्स ग्रांड प्रिक्स में 200 मीटर रेस में हिस्सा लिया था जहाँ उन्होंने 23.65 सेकंड में उस रेस को पूरा कर गोल्ड मेडल जीता था।

**दूसरा गोल्ड** हिमा ने पांच दिन बाद 7 जुलाई को पोलैंड में कुटनो एथलेटिक्स मीट में 200 मीटर रेस को 23.97 सेकेंड में पूरा कर जीता था।

**तीसरा गोल्ड** 13 जुलाई को चेक रिपब्लिक में हुई क्लांदो मेमोरियल एथलेटिक्स में महिलाओं की 200 मीटर रेस को 23.43 सेकेंड में पूरा कर जीता था। यहाँ भी गोल्ड मिला।

चेक रिपब्लिक में ही उसने **चौथा गोल्ड** 17 जुलाई को ताबोर एथलेटिक्स मीट में 200 मीटर रेस को 23.25 सेकेंड में पूरा कर जीता था।

## परिचय

★ हिमा दास का जन्म 09 जनवरी, 2000 को असम के नवगाँव जिले के ढिंग गाँव में हुआ था।

★ उसके पिता एक साधारण किसान हैं और चावल की खेती करते हैं।

★ हिमा दास शारीरिक रूप से बहुत सशक्त थीं और स्कूल के समय में लड़कों के साथ फुटबॉल खेलती थीं। वे एक स्ट्राइकर के तौर पर अपनी पहचान बनाना चाहती थीं। हिमा दास अपना कैरियर फुटबॉल में देख रही थीं और भारत के लिए खेलने की उम्मीद कर रही थीं।

★ हिमा दास ने जवाहर नवोदय विद्यालय के शारीरिक शिक्षक श्री शमशुल हक की सलाह पर दौड़ना शुरू किया।

★ उसने 3 साल पहले ही रेसिंग ट्रैक पर कदम रखा था। उसके पास पैसों की कमी थी लेकिन कोच ने उसे ट्रेंड कर मुकाम हासिल करने में मदद की।

★ हिमा के कोच निपोन ने उसे अंतर-जिला प्रतियोगिता के दौरान देखते हुए कहा कि "हिमा ने

सबसे सस्ते स्पाइक्स पहन रखे हैं और इसके बावजूद भी वह 100 मीटर और 200 मीटर की दौड़ में स्वर्ण जीत जाती हैं। वह हवा की तरह दौड़ रही थीं। अपने सम्पूर्ण जीवन में मैंने इतनी कम उम्र में ऐसी प्रतिभा नहीं देखी।

★ निपोन ने हिमा पर गाँव से 140 कि.मी. दूर गुवाहाटी में स्थानांतरित होने के लिए दबाव डाला और उसे आश्वस्त किया कि उसके पास एथलेटिक्स में सुनहरा भविष्य है।

★ चेक गणराज्य में आयोजित क्लाड्नो एथलेटिक्स में भाग लेने पहुँचीं हिमा दास ने आर्थिक रूप से कमजोर होते हुए भी अपनी उदारता और अपने लोगों की मदद के लिए 17, जुलाई 2019 को मुख्यमंत्री राहत कोष में राज्य में बाढ़ राहत के लिए अपना आधा वेतन दान कर दिया।

★ हिमा दास का निजी सर्वश्रेष्ठ समय 50.79 सेकेंड है जो उन्होंने पिछले साल हुए एशियाई खेल के दौरान हासिल किया था।

**हिमा दास का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन**

100 मीटर – 11.74 सेकेंड में

200 मीटर – 23.10 सेकेंड में

400 मीटर – 50.79 सेकेंड में

4X400 मीटर रिले – 3:33.61 में

हिमा दास का प्रेरणादायी जीवन प्रख्यात फिल्म कलाकार अक्षय कुमार को इतना भाया कि उन्होंने हिमा दास की वास्तविक जिन्दगी पर जो कि असली नायिकों वाली है, फिल्म बनाने की इच्छा व्यक्त की है।

हिमा दास की लम्बाई 5 फुट 5 इंच तथा वजन 55 कि.ग्रा. है। हिमा दास के कोच निपोन दास का उनकी सफलता में विशेष योगदान रहा। असम के नवगाँव जिले के ढिंग गाँव में जन्म लेने के कारण उसे प्यार से ढिंग एक्सप्रेस के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

– प्रस्तुति : हरजीत निषाद

**श्रीहरिकोटा।** सवा अरब सपनों को परवान चढ़ाते हुए 15 मंजिला ऊंचा बाहुबली रॉकेट GSLV MK-III 22 जुलाई को चंद्रयान-2 को लेकर चांद की ओर उड़ गया। इसरो ने आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से अंतरिक्ष में यह ऐतिहासिक छलांग लगाई और 16 मिनट बाद ही चंद्रयान पृथ्वी की निर्धारित कक्षा में पहुँच गया। इस तरह इस महत्वाकांक्षी मून मिशन का पहला चरण कामयाबी से पूरा हुआ। इससे उत्साहित इसरो के चेयरमैन ने कहा कि यह लॉन्च तो हमारी उम्मीद से भी बेहतर रहा।

अगले 45 दिन में चंद्रयान-2 को 15 बेहद अहम चरणों से गुजरना होगा। इसके बाद 6 से 8 सितंबर के बीच चंद्रयान के लैंडर और रोवर चांद के साउथ पोल पर उतरेंगे। चांद को फतह कर चुके अमेरिका, रूस और चीन ने भी अब तक इस जगह पर कदम नहीं रखा है। भारत के पहले मून मिशन ने चांद के इस इलाके में बर्फ के संकेत दिए थे, तभी से इस हिस्से के प्रति दुनिया की रुचि बढ़ी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि यह अभियान वैज्ञानिकों की ताकत को दिखाता है। पूरा भारत गर्व महसूस कर रहा है।

– प्रस्तुति : श्रीराम प्रजापति

कहानी : ज़ाकिर अली

# फैसला

एक बार किस्मत और मेहनत के बीच विवाद छिड़ गया। किस्मत का कहना था कि मैं चाहूं तो आदमी के दिन बदलते देर नहीं लगती। जबकि मेहनत का विचार था कि आदमी का जीवन उसकी मेहनत पर ही निर्भर करता है।

काफी देर तक बहस चली, लेकिन कोई फैसला न हो सका। थक-हारकर दोनों ने अपनी-अपनी बात आजमाने का फैसला किया। पहला मौका किस्मत को दिया गया। उसने देखा कि एक राहगीर सामने से चला आ रहा है। किस्मत ने एक हीरे की अंगूठी रास्ते में डाल दी और पेड़ की ओट में छिप गयी।

राहगीर एक मजदूर था। उसका नाम था अनूप। अनूप मजदूरी के लिए शहर की ओर जा रहा था। अंगूठी देखकर वह बहुत खुश हुआ। उसने अंगूठी हाथ में पहन ली और वापस अपने घर की ओर लौट पड़ा।

गर्मी के दिन थे। चलते-चलते अनूप को प्यास लगी। वह एक तालाब के पास रूका और झुककर पानी पीने लगा। पानी पीते समय अंगूठी अनूप के हाथ से निकलकर पानी में गिर गयी। यह देखकर अनूप को बहुत दुख हुआ। उसने बहुत खोजा, पर अंगूठी उसे न मिली। थक-हारकर अनूप वापस शहर की ओर चल दिया।

अंगूठी खोने से जितना दु:ख अनूप को हुआ, उससे कहीं ज्यादा किस्मत को हुआ। दूसरी बार जब अनूप उसी जगह से गुजरा तो किस्मत ने उसके आगे मोतियों का हार डाल दिया। हार देखकर अनूप की खुशी की सीमा न रही। वह अंगूठी के दु:ख को भूल गया और अपने घर को लौट पड़ा।

हार वाकई बहुत सुन्दर था। उसकी शोभा देखते ही बनती थी। अनूप रास्ते में बार-बार उसे निकालकर देखता और फिर अपनी जेब में रख लेता। जैसे ही अनूप ने पांचवीं बार हार निकाला, एक चील झपट्टा मारकर उसे ले उड़ी।

अनूप खूब चीखा-चिल्लाया और चील का पीछा किया, पर वह हार न पा सका। चील हार को लेकर 'नौ दो ग्यारह' हो गयी। इस बार अनूप को बहुत दु:ख हुआ। उसे अपने आप पर बहुत क्रोध आया। पर वह कर भी क्या सकता था? निराश होकर वह पुन: मजदूरी की तलाश में निकल पड़ा।

अनूप के हाथ से हार निकल जाने पर मेहनत ने किस्मत की ओर देखा। वह कुछ न बोली। अभी उसे स्वयं को एक बार और आजमाना था। इस बार उसने अनूप के रास्ते में पारस पत्थर फेंका। पारस को देखकर अनूप खुशी से बावला हो उठा। उसने पारस को अपनी जेब में रखा और दौड़ता हुआ अपने घर जा पहुँचा।

घर पहुँचने पर अनूप ने अपनी पत्नी को आवाज दी। उस समय उसकी पत्नी किसी काम से पड़ोसी के घर गयी हुई थी। यह देखकर अनूप झुंझला उठा। दूसरे के घर पारस लेकर जाना ठीक नहीं था। इसलिए अनूप ने पारस को एक स्थान पर रख दिया और अपनी पत्नी को खोजने चला गया।

अनूप के जाने के थोड़ी देर बाद उसकी पड़ोसन किसी काम से अनूप के घर आयी। सहसा उसकी नजर पारस पर जा पड़ी। पारस देखकर उसकी नीयत डोल गयी। जल्दी से उसने पारस उठाया और वहाँ से खिसक गयी।

अनूप को लौटा देखकर उसकी पत्नी बहुत नाराज हुई। घर में घुसते ही वह जोर से चिल्लाई– तुम्हें काम पर नहीं जाना क्या? रास्ते से क्यों लौट आए?

–अब हमारे दिन फिर गये। हमें काम करने की जरूरत नहीं। आज मैं वह चीज लाया हूँ, जिसे देखकर ... कहते हुए अनूप ने पारस उठाने के लिए तख्ते की ओर हाथ बढ़ाया। पर ये क्या? पारस तो गायब था। अनूप के पैरों के नीचे से जमीन निकल गयी। उसे काटो तो खून नहीं।

–कौन-सा कुबेर का खजाना तुम्हारे हाथ लग गया है, जरा हम भी तो देखें।– उसकी पत्नी जोर से बोली– अरे, ये तुमको क्या हुआ?

अनूप के बोल नहीं फूट रहे थे पर किसी तरह से उसने सारी बात बतायी। उसकी पत्नी ने अपना सिर

ही पीट लिया। वह काफी देर तक चीखती-चिल्लाती रही और अनूप को बुरा-भला कहती रही। अनूप चुपचाप सुनता रहा। वह निराश होकर एक बार फिर मजदूरी की तलाश में निकल पड़ा।

अनूप की यह दशा देखकर किस्मत को बहुत बड़ा धक्का लगा। तीन बार प्रयास करने के बावजूद वह अनूप की स्थिति नहीं बदल सकी। इस बार मेहनत को मौका मिला। मेहनत ने अनूप के रास्ते में एक कुल्हाड़ी डाल दी।

कुल्हाड़ी देखकर अनूप ने बुझे मन से उसे उठा लिया और शहर पहुँचा। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसे कहीं मजदूरी न मिली। निराश होकर वह घर लौट आया।

अनूप के घर के पिछवाड़े एक सूखा पेड़ था। उसने सोचा क्यों न पेड़ काटकर इसकी लकड़ियां ही बेची जाएं। उसने कुल्हाड़ी उठाई और पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर एक घोंसला बना हुआ था। जैसे ही घोंसले में अनूप की नज़र पड़ी, वह हैरान रह गया। उसमें वही मोतियों का हार रखा हुआ था, जिसे चील ले उड़ी थी।

उस हार को देखकर अनूप एकदम से चिल्लाया– मिल गया, मिल गया। खोया माल मिल गया। ठीक उसी समय अनूप की पड़ोसन पारस पत्थर को अपने आंगन में लिये बैठी थी। उसने जब अनूप को चिल्लाते सुना, तो वह डर गयी। उसे लगा कि उसकी चोरी पकड़ी गयी। उसने चुपचाप पारस वापस कर दिया और क्षमा मांगने लगी।

हार व पारस पाकर अनूप और उसकी पत्नी की खुशी की सीमा न रही। अनूप बाजार में गया और उसने वह हार बेच दिया। बाजार से उसने फल-सब्जी, कपड़े तथा मछलियां खरीदीं और खुशी-खुशी घर को लौट पड़ा।

अनूप की पत्नी को मछलियां बहुत पसन्द थीं। मछलियां लेकर वह उन्हें काटने बैठने गयी। जैसे ही उसने एक मछली काटी, कट की आवाज हुई और अगले ही पल एक अंगूठी जमीन पर आ पड़ी।

–ये तो वही अंगूठी है, जो तालाब में गिरी थी।– अनूप खुशी से उछल पड़ा और ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

अनूप के घर से दूर बैठी किस्मत और मेहनत सारा तमाशा देख रही थीं। अंगूठी के मिल जाने पर मेहनत धीरे से मुस्कुराई। वह बोली– अब बताओ किस्मत बड़ी है या मेहनत?

किस्मत कुछ नहीं बोली। उसकी समझ में आ गया था कि जब आदमी मेहनत से काम लेता है, तभी उसकी किस्मत भी साथ देती है।

# दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

वह अपने पुत्र को शहर के किसी अच्छे कॉलेज में पढ़ाने के लिए पैसा इकट्ठा कर रहा था।
अब समय आ गया था। जब वह अपनी कमाई हुई पूंजी अपने बेटे के हाथों में देकर उसे शहर पढ़ने के लिए भेज रहा था।
रमेश ने शहर जाकर बहुत मन लगाकर पढ़ाई की तथा बहुत अच्छी नौकरी भी प्राप्त कर ली।
जल्द ही रमेश ने एक अच्छा घर भी खरीद लिया तथा अपने पुत्र और पत्नी के साथ आराम से रहने लगा।

नत्था किसान अब बूढ़ा हो चला था। अब उसे किसी सहारे की जरूरत थी। वह अपने पुत्र के साथ रहने के लिए उसके पास आ गया।
रमेश अपने पिता के आने से खुश नहीं था।
उसने अपने पिता के लिए अलग से एक कमरा बनवा दिया।

एक दिन रमेश अपने काम से वापस लौटा तो उसने देखा कि उसका पुत्र एक मिट्टी का घर बना रहा है। यह देखकर रमेश बहुत हैरान हुआ।

अपने पुत्र के इस उत्तर से रमेश की आँखें खुल गई। उसे अपने किये पर पछतावा हुआ। उसने अपने पिता के चरणों में गिरकर उनसे माफी मांगी।

**शिक्षा : अपने बुजुर्गों के साथ हम जैसा व्यवहार करेंगे वैसा ही व्यवहार हमारे साथ हमारे बच्चे करेंगे।**

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

# राष्ट्र भाषा हिंदी महान

अपनी राष्ट्र भाषा हिंदी महान।
देश की जीवन रेखा हम सबकी शान।
सफलतम साधन माध्यम संवाद का,
हिंदी में बस रही जन-जन की जान।

संस्कृत से पाली फिर हिंदी बनी।
राष्ट्र भाषा प्यारी अपनी बनी।
उत्तर और दक्षिण को जोड़ती चली,
मातृभाषा देश की हिंदी बनी।

**जन** भाषा हिंदी के रूप कितने?
**थोड़ी**-थोड़ी दूर पर स्वरूप इतने।
**अवधी**, ब्रज, भोजपुरी बोलते करोड़ों,
**राजस्थानी**, मैथिली स्वरूप कितने?

**गूंगा** है राष्ट्र राष्ट्रभाषा के बिना।
**एकता** अधूरी अपनी भाषा के बिना।
विश्व हिंदी सम्मेलन करता है आह्वान,
**हिंदी** फैलाएं सब निराशा के बिना।

# शिक्षक दिवस साल में आता

शिक्षक दिवस साल में आता।
शिक्षक का सम्मान सिखाता।
पांच सितम्बर सबको भाता,
जीवन को नव दिशा दिखाता।

कक्षाओं में आते टीचर।
नया पाठ पढ़ाते टीचर।
पिछला याद कराते टीचर।
आगे हमें बढ़ाते टीचर।

साफ सफाई हमें सिखाते।
अच्छी बातें हमें बताते।
सबको आदर मान दिलाते,
शिक्षक सबके मन को भाते।

आलेख : अभय कुमार जैन

# कड़वे नीम की मीठी बातें

नीम का वैज्ञानिक नाम अजाडिराचता इण्डिका है। इसे संस्कृत में निम्ब कहते हैं। नीम का वृक्ष पूरे भारत में हर स्थान पर पाया जाता है। यह वृक्ष सदाबहार, घने छत्र वाला, सुन्दर और छायादार होता है।

विशेषज्ञों के अनुसार नीम अत्यंत गुणकारी होता है इसलिए नीम से अनेक जीवाणुनाशक औषधियां एवं साबुन, सौंदर्य प्रसाधन, टूथपेस्ट, डेटोल और पाउडर आदि बनाये जाते हैं।

आयुर्वेद, यूनानी तथा प्राकृतिक चिकित्सा तीनों पद्धतियों में नीम का अत्यधिक औषधिय महत्व है। यह कृषि फसलों के हानिकारक कीड़ों, दीमक, मच्छर, घुन, इल्ली और कपड़े काटने वाले कीड़ों से मुक्ति दिलाता है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के अनुसार नीम शीतल एवं उष्णता को नष्ट करने वाला होता है। इससे त्वचा रोग नष्ट हो जाते हैं। नीम के वृक्ष का प्रत्येक भाग जैसे पत्ते, कोपलें, फूल, कच्चे-पक्के फल, बीज गिरी, खली, गौंद, जड़, रस, लकड़ी तथा पत्तों के मध्य की सींक आदि गुणों से भरपूर है।

लखनऊ के राष्ट्रीय उद्यान अनुसंधान केन्द्र ने यह सिद्ध किया है कि नीम के पौधे वायुमण्डल में से कारखानों द्वारा फेंकी गई हानिप्रद धूल को सोखकर तथा हानिकारक जीवाणुओं का नाश करके वायु प्रदूषण की समस्या को हल करके हमारे पर्यावरण को शुद्ध बनाते हैं।

ऋग्वेद में कीटनाशक वृक्षों की कुल संख्या 1600 बताई गई है जिसमें नीम को अत्यधिक महत्व का माना है। जिसका तीखापन कीड़े-मकोड़ों से सुरक्षा प्रदान करता है। आयुर्वेद के पितामह चरक ने नीम को खुजली नाशक बताया है। सुश्रुत ने इस वृक्ष को कफ, वातनाशक तथा सूजन और जलन को शांत करने वाला कहा है। लोक साहित्य में नीम के गुण को विविध प्रकार से उल्लेख किया गया है।

कीटानाशकी गुणों से युक्त होने के कारण कृषि के क्षेत्र में भी नीम के उपयोग संबंधी कई महत्वपूर्ण अनुसंधान हुए हैं। परीक्षण से यह सिद्ध हो चुका है कि भंडारित अनाज में नीम की पत्तियां मिला देने से वह कई प्रकार के कीड़े-मकोड़ों से सुरक्षित रह सकता है। यह भी पाया है कि यदि निम्बोलियों को पीसकर उन्हें पानी में मिलाकर फसल पर छिड़क दिया जाये तो कृषि के कई हानिकारक कीट फसल को हानि नहीं पहुँचा सकते हैं।

नीम में असाधारण रूप से कीटाणुनाशक शक्ति है। नीम की दातुन से दांत साफ, चमकदार, मजबूत एवं स्वस्थ रहते हैं।

नीम की पत्तियों को पानी गर्म करते समय पानी में डाल दें एवं इस पानी से स्नान करने पर चर्म रोग दूर हो जाते हैं। नीम में जब नई पत्तियों का आगमन होता है। उस समय तीन दिनों तक नियमित 5-7 पत्तियां नीम की पीसकर पी लें। इससे खून साफ रहेगा एवं स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। नीम मधुमेह के रोगियों के लिए भी लाभप्रद है।

नीम के बीज से मार्गोसा तेल निकाला जाता है जो कुष्ठ एवं चर्म रोगों को दूर करने के लिए काम में लिया जा सकता है। इसके तेल की मालिश करने से गठिया के रोगियों को भी लाभ मिलता है।

इसकी सूखी हुई पत्तियों को जलाने से मच्छर भाग जाते हैं। ऊनी कपड़े रखते समय एवं अनाज भंडारित करते समय नीम की पत्तियां रखने से उनमें कीड़े नहीं लगते हैं।

नीम का वृक्ष अन्य पेड़ों की अपेक्षा अधिक ऑक्सीजन देता है। इसी वजह से प्राचीन समय में घर के आंगन में नीम के पेड़ लगाने की परम्परा रही है। कहा जाता है कि यदि कुष्ठ रोगी नियमित नीम की छाया में नीम के तेल की मालिश करें। नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर स्नान करें तो बहुत लाभ मिलता है।

**औषधीय उपयोग :–**

**जल जाने पर :** अगर आप खाना बनाते वक्त या किसी दूसरे कारण से अपना हाथ जला बैठते हैं तो तुरन्त उस जगह पर नीम की पत्तियों को पीसकर लगा लें। इसमें मौजूद एंटीसेप्टिक गुण घाव को ज्यादा बढ़ने नहीं देता है।

**कान दर्द :** अगर आपके कान बहने में दर्द रहता है तो नीम का तेल इस्तेमाल करना काफी फायदेमंद रहेगा। कई लोगों को कान बहने की बीमारी होती है। ऐसे लोगों के लिए नीम का तेल एक कारगर उपाय है।

**दांतों के लिए :** दांतों और मसूढ़ों की देखभाल के लिए महंगे टूथपेस्ट इस्तेमाल करने के बजाय नीम का दातुन अपने आप में पर्याप्त है। नीम की दातुन पायरिया की रोकथाम में भी कारगर होती है।

**बालों के लिए भी फायदेमंद :** नीम एक बहुत अच्छा कंडीशनर है। इसकी पत्तियों को पानी में उबालकर उसके पानी से बाल धोने से रूसी और फंगस जैसी समस्या दूर हो जाती है।

**फोड़े-फुन्सियों पर लगाने के लिए :** कई बार ऐसा होता है कि खून साफ न होने की वजह से समय-समय पर फोड़े हो जाते हैं। ऐसे में नीम की पत्ती पीसकर प्रभावित जगह पर लगाने से फायदा होगा।

**कृषि क्रिया में नीम का उपयोग :**

नीम की कीट नियंत्रण शैली अनोखी है जिसके कारण विश्व की सबसे अच्छी कीट नियंत्रण दवा मानी जाती है।

- ★ यह फसल के लिए लाभदायक कीड़ों के लिये सुरक्षित होता है।
- ★ इसका प्रयोग संभावित कीट नियंत्रक में एक अवयव के रूप में किया जाता है।
- ★ यह सस्ता सुरक्षित एवं आसानी से उपलब्ध होता है।
- ★ नीम की पत्ती का सत्, नीम के तेल या निंबोली सत् को छिड़काव करते समय सिरदर्द, मूर्छा इत्यादि किसी प्रकार की शारीरिक कठिनाई नहीं होती है बल्कि स्फूर्ति एवं ताजगी महसूस होती है।
- ★ नीम के रसायन मानव के लिए पूर्णतया हानिरहित हैं। इन्हें फलों और सब्जी पर भरपूर प्रयोग किया जा सकता है। यदि यह फल या सब्जी के अन्दर चला भी गया या ऊपर लगा रह गया तो यह फायदा ही पहुँचायेगा हानि तो बिल्कुल नहीं।
- ★ नीम भारत में सर्वत्र उपलब्ध है तथा बिना किसी विशेष मेहनत के इसे उगाया जा सकता है।

आज जब अधिकाधिक वृक्ष लगाना हमारा नैतिक, धार्मिक व राष्ट्रीय कर्तव्य है तो हमें चाहिए कि इस प्रकार के गुणों से भरपूर वृक्ष लगायें ताकि उसके गुणों का अधिकाधिक प्रयोग कर सकें। खेतों की मेड़ों पर भी नीम के वृक्ष लगाने से कीटों का प्रकोप फसल पर यकायक नहीं हो पाता है। इसका कारण इस वृक्ष के अनेक लाभ हैं। हमें हमारे जन्मदिन, शादी की सालगिरह, बुजुर्गों की पुण्य तिथि पर वृक्षारोपण करना चाहिए।

बाल कहानी : सीताराम गुप्ता

# सफलता का रहस्य

गोपाल के पास जमीन तो काफी थी और वह परिश्रम भी खूब करता था लेकिन इसके बावजूद उसके खेतों में जो अनाज और सब्जियां पैदा होती थीं वे उसके पड़ोसियों के मुकाबले काफी कम बैठती थीं। गोपाल को इस बात का बड़ा मलाल था। वह भी चाहता था कि उसका घर भी पड़ोसियों के घरों की तरह अनाज से भरा रहे और ढेर सारी सब्जियां बेचकर खूब पैसा कमाए। गोपाल ने इस बात पर खूब सोच-विचार किया तो उसे पता चला कि उसके पड़ोसियों के खेतों में सिंचाई के लिए कुएं खुदे हुए हैं। समय पर सिंचाई हो जाने से उनके खेतों में फसलें खूब बढ़ती तथा फलती-फूलती हैं और पर्याप्त अनाज और सब्जियां उत्पन्न होती हैं। गोपाल ने भी अपने खेतों की सिंचाई करने के लिए एक कुआं खोदने का निश्चय किया।

एक उपयुक्त स्थान का चुनाव कर गोपाल ने खुदाई शुरू कर दी। वह लगातार काम करता रहा और दस-बारह फुट का गड्ढा खोद डाला। दस-बारह फुट जमीन खोदने पर भी जब पानी नहीं निकला तो वह उदास होकर बैठ गया। उसे उदास बैठा देखकर उस रास्ते से गुजरने वाले एक व्यक्ति ने गोपाल से उसकी उदासी का कारण पूछा और उसे कुछ दूरी पर एक दूसरा कुआं खोदने का परामर्श दिया। अब गोपाल ने उस व्यक्ति के बताए नये स्थान पर खुदाई शुरू कर दी। लेकिन दस-बारह फुट तो क्या पन्द्रह फुट खुदाई करने के बाद भी पानी के दर्शन नहीं हुए। गोपाल फिर निराश होकर बैठ गया।

तभी एक अन्य व्यक्ति वहाँ आया और उसने गोपाल को सलाह दी कि यदि यहाँ पानी नहीं निकला तो कोई बात नहीं। वहाँ सामने पेड़ के पास कुआं खोदोगे तो पानी अवश्य निकल आएगा। अब गोपाल उस व्यक्ति के द्वारा सुझाए गये स्थान पर खुदाई करने में जुट गया और मेहनत करके बीस फुट गहरा गड्ढा खोद डाला। लेकिन पानी अब भी नदारद था। गोपाल झुंझला उठा। गोपाल की झुंझलाहट देख पास से गुजरने वाले एक और व्यक्ति ने मशविरा दिया कि यदि वर्तमान जगह से पश्चिम की ओर बीस फुट की दूरी पर कुआं खोदोगे तो इस बार पानी अवश्य ही निकल आएगा। गोपाल लोगों की सलाह मानकर काफी परेशान हो चुका था। उसकी हिम्मत

जवाब दे चुकी थी। अत: उसने फावड़ा एक ओर फेंक दिया और आराम करने लगा। उसके मन में अनेक प्रश्न उठने लगे। उसे लगा कि मैं बेकार ही कुआं खोदने के झंझट में पड़ा लेकिन उसे पड़ोसियों के खेतों के कुएं और उनकी लहलहाती फसलें नज़र आने लगीं। उसके मन में कुआं खोदने की इच्छा फिर बलवती हो उठी।

गोपाल ने फिर आस-पास के खेतों में बने कुओं के बारे में सोचना प्रारम्भ किया तो उसके दिमाग में एक बात कौंध उठी कि जब सबके कुओं में भरपूर पानी है तो मेरे कुएं में क्यों नहीं? कहीं न कहीं कोई भूल हुई है जो पानी नहीं आ रहा है। उसने अपनी बुद्धि पर जोर डाला तो याद आया कि आस-पास के सभी कुएं तो पच्चीस से तीस फुट तक गहरे हैं। यह बात ध्यान में आते ही उसके बदन में फुर्ती आ गई और चेहरे पर उत्साह झलकने लगा।

गोपाल ने फौरन फावड़ा उठाया और पुन: खुदाई शुरू कर दी लेकिन इस बार गोपाल ने नये स्थान पर खुदाई करने की बजाए पहले से ही बीस फुट गहरे खोदे गये गड्ढे को और गहरा करने में जुट गया। उसके हाथ तेजी से चलने लगे। गोपाल ने मुश्किल से दो-तीन फुट ही और खोदा होगा कि पानी के स्रोत दिखाई पड़ने लगे। वह और जल्दी-जल्दी फावड़ा चलाने लगा और थोड़ा-सा ही और खोदने पर कुआं में पानी आने लगा। उसकी खुशी की सीमा न रही। उसे घर में अनाज के बड़े-बड़े ढेर नजर आने लगे और आएं भी क्यों न?

कुआं खोदने के अपने निश्चय और कुएं में पानी आने तक गोपाल की समझ में एक बात अच्छी तरह आ गई थी और वो ये कि सफलता के लिए केवल परिश्रम ही नहीं अपितु व्यावहारिकता भी जरूरी है और किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए एक ही दिशा में निरन्तर प्रयत्नशील रहना भी अनिवार्य है।

प्रस्तुति : राधा नाचीज (नजफगढ़)

# पहेलियां

1. गोल-गोल चेहरा,
पेट से रिश्ता गहरा।

2. मुझे सुनाती सबकी नानी,
प्रथम कटे तो होती हानि।
बच्चे भूलते खाना पानी,
एक था राजा, एक थी रानी।

3. छः अक्षर का मेरा नाम,
आसमान में उड़ना मेरा काम।
पर लगता अतिशय दाम,
बतलाओ दोस्तों इसका नाम?

4. मिट्टी का बनाया मकान,
लोहे की छत लगाई।
सुबह-शाम उस घर में,
रोजाना आग लगाई।

5. हवालात में बंद पड़ी हूँ,
फिर भी बाहर पाओगे।
बिन पैर के चलूं मैं,
बिन मेरे मर जाओगे।

6. अगर कहीं मुझको पा जाता,
बड़े प्रेम से तोता खाता।
बच्चे, बूढ़े अगर खा जाते,
व्याकुल हो आँखें भर लाते।

7. आदि कटे तो बनता टर,
मध्य कटे तो मर।
सब्जी के मैं आता काम,
सोचो तो क्या मेरा नाम?

8. जहाँ पहुँच मांगे मुराद,
जले दीप, चढ़े प्रसाद।
साढ़े तीन अक्षर का नाम,
होती पूजा सुबह-शाम?

9. आदि-अन्त काटो तो मेरा,
बन जाता है माट।
लाजवाब बनती है मेरी,
खाकर देखो चाट?

10. मध्य कटे तो बने देवता,
आदि कटे तो नार।
महिलाओं से ही चलता,
जिसका कारोबार?

11. देवनागरी जिसकी लिपि,
कहलाती सुरभाषा।
हिन्दी की है नानी,
ना समझे वो अज्ञानी?

12. चार पैर दो हाथ,
निर्जीव सब अंग।
मुझे पाने हेतु होते,
बड़े-बड़े हुड़दंग।

उत्तर : 1. रोटी, 2. कहानी, 3. हवाईजहाज, 4. चूल्हा-तवा, 5. हवा, 6. हरी मिर्च, 7. मटर, 8. मन्दिर, 9. टमाटर, 10. सुनार, 11. संस्कृत, 12. कुर्सी।

– संग्रहकर्ता : प्रो. ( डॉ. ) जमनालाल बायती

# महान पुरुषों की नज़र में कितनी उपयोगी हैं पुस्तकें

★ मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूंगा क्योंकि पुस्तकों में वह शक्ति है कि वे जहाँ भी होंगी, वहीं स्वर्ग बन जायेगा।

– बाल गंगाधर तिलक

★ कपड़े बेशक पुराने पहनो परन्तु पुस्तकें नई खरीदो। – थोरो

★ जो पुस्तक सबसे अधिक सोचने को मजबूर करे वही उत्तम पुस्तक है। – पंडित जवाहरलाल नेहरु

★ अच्छी पुस्तक वह है जो आशा के साथ खोली जाये तथा लाभ के साथ बंद की जाये।

– एमी ब्रासन एलकाट

★ पुस्तकों का संकलन आधुनिक विद्यालय है।

– कालन्पी

★ सच्चे मित्र के चुनाव के बाद सर्वप्रथम तथा प्रधान जरूरत है अच्छी तथा उत्कृष्ट पुस्तक का चयन। – कोलटन

★ अच्छी पुस्तक एक महान आत्मा का अमूल्य जीवन रस है। – मिलटन

★ बुरी पुस्तकों का पढ़ना जहर पीने के समान है।

– टॉलस्टाय

★ पुस्तकें विश्वस्त दर्पण हैं जो संतों और वीरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं। – गिब्बन

★ पुस्तक जाग्रत एवं सजीव देवता है उसकी सेवा करके तत्काल वरदान प्राप्त किया जा सकता है।

– रामनरेश त्रिपाठी

– रूपनारायण काबरा

# साक्षरता संवाद

अक्षर अक्षर सीख कर,
पुस्तक पढ़ना सीखो।
ज्ञान बढ़ेगा मान बढ़ेगा,
रहे न जीवन फीको।।

पढ़े-लिखे हो अगर आप,
तो करो आप यह कर्म।
अनपढ़ को पढ़ना सिखलाओ,
यह सबसे ऊँचा धर्म।।

जो पढ़ने से रह जाता है,
जीवन में दुख ही पाता है।
इसीलिये कहता हूँ भैया,
पढ़ने से ही चलती है जीवन नैया।।

अनपढ़ को यदि आप पढ़ाओ,
इस सेवा का मेवा पाओ।
यह तो ईश्वर की पूजा है,
इससे ऊँचा धर्म नहीं कोई दूजा है।।

जो प ढ़ जाता बढ़ जाता है,
अनपढ़ पीछे रह जाता है।
पढ़ने की ललक जगाओ,
जीवन में खुशियां पाओ।।

पुस्तक ऐसा धन है भाई,
इसे चोर नहीं ले जाता।
अगर चोर पुस्तक ले जाये,
वह फिर चोर नहीं रह जाता।
पुस्तक उसको देती ज्ञान,
बढ़ जाता उसका सम्मान।।

# बादल से दो बात

बता कहाँ से आया बादल, बता कहाँ से तू आया?
अरब जलधि से उड़कर आया, बंग देश की खाड़ी से।
किसमें बैठ अरे तू आया, प्लेन, कार या गाड़ी से?
पंख तुम्हारे नहीं दिखते, कैसे मानूं उड़ आया?

नदी, समन्दर, पर्वत ऊँचे, आये होंगे तेरे मग में?
ताजमहल और कुतुब, अजन्ता आयें होंगे तेरे डग में।
कौन देश का कौन शहर, ऐ बादल! तुझको है भाया?
बता कहाँ से आया बादल, बता कहाँ से तू आया।

तुम तन के अति काले बादल, पर मन के अति उज्ज्वल हो,
जीवनदाता कृषक गणों की, आशा के तुम संबल हो।
जी भरकर तुम बरसो बादल, रिमझिम रिमझिम झड़ी लगा दो,
मरुभूमि लहलहा उठे, तुम अमृत की वह धार गिरा दो,
तेरा आना भला लगे है, तू सबके मन को भाया।
बता कहाँ से आया बादल, बता कहाँ से तू आया।

प्रेरक-प्रसंग : अर्चना सौगानी

# धमकी से न डरने वाले

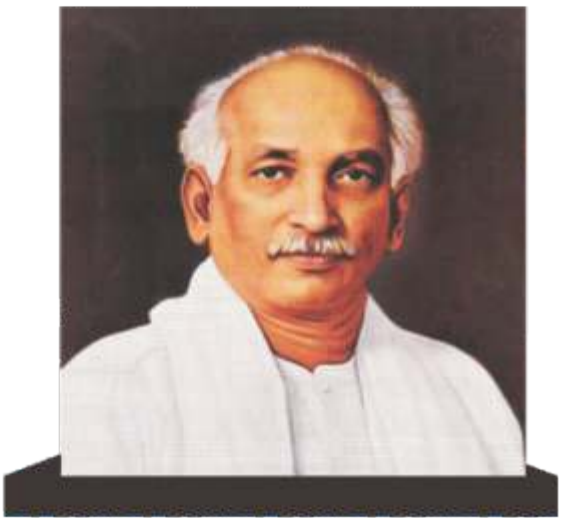

उन दिनों की बात है, जब प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता डॉ. पट्टाभि सीतारमैया अपने सभी पत्रों पर हिन्दी में ही पता लिखते थे। दक्षिण भारत के डाकखाने वालों को इससे बड़ी असुविधा होती थी। डाकखाने वालों ने कई बार उनके पास नोटिस भेजे कि वे अंग्रेजी भाषा में पता लिखें।

लेकिन हर बार के नोटिस के जवाब में डॉ. साहब ने यही उत्तर दिया।– "मैं भारत की राष्ट्रभाषा को छोड़कर अंग्रेजी में, जो भारत की भाषा नहीं है। क्यों पता लिखूं?

इस पर डाकखाने वालों ने कहा– "आप अंग्रेजी में न सही, यहाँ की स्थानीय भाषा तेलुगू में ही पता लिखे। पर हिन्दी में नहीं क्योंकि हमारे पास हिन्दी का कोई जानकार नहीं है।"

डॉ. साहब और डाकखाने वालों के बीच काफी वाद-विवाद चला। उन्हें धमकियां तक दी गईं कि यदि उन्होंने अपने पत्रों में हिन्दी पता लिखा तो डाकखाना उनके तमाम पत्रों को निश्चित स्थान पर पहुँचाने के लिये बाध्य नहीं होगा। वे 'डेड लेटर' में सम्मिलित कर आग में जला दिये जायेंगे।

डाकखाने वालों की ऐसी धमकी सुनकर डॉ. साहब ने पूरे 269 पोस्टकार्ड अपने मित्रों सम्बन्धियों और विभिन्न नेताओं को लिखे। जिन पर हिन्दी में ही पता लिखा और सारे पत्र डाकखाने में ले जाकर दे दिये और कहा– जरा, मैं भी तो देखता हूँ कि तुम इन पत्रों को 'डेड लेटर' कैसे बनाते हो? कैसे इनमें आग लगाते हो?

डॉ. साहब का यह हौसला देखकर डाकखाने वाले हक्के-बक्के रह गये। डाकघर के बड़े बाबू ने उनसे क्षमा याचना की और कहा– "जीत आपकी ही हुई है, हम तो आपकी सेवा में तुरन्त एक हिन्दी का जानकार रख रहे हैं। आपके सभी पत्रों के हिन्दी में लिखे पतों का स्वागत है।" इसके बाद डाकखाने वालों ने अपने 'मछलीपट्टनम' के डाकघर में एक हिन्दी जानकार को नौकरी दे दी। अब डॉ. साहब अपनी जीत पर बड़े प्रसन्न थे। •

बाल कविता : रंजना चौधरी

## आसमान में

आसमान में उड़ते बादल,
उड़ते-उड़ते आते।
बड़ी दूर से आते हैं वे,
बड़ी दूर को जाते।

साथ न जाने कितना पानी,
देखो वे भर लाते।
उड़ते-उड़ते आते हैं वे,
धरती को नहलाते।

जानकारीपूर्ण लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

# एक रोचक समुद्री जीव : बिल्ली मछली

बिल्ली मछली मुख्य रूप से ताजे पानी की नदियों और झीलों की मछली है। यह उत्तरी गोलार्द्ध के ठण्डे स्थानों को छोड़कर सम्पूर्ण विश्व में पाई जाती है। इसके अन्तर्गत 35 परिवारों की दो हजार से अधिक जातियां आती हैं, जिनमें से कुछ नदियों के मुहानों पर और कुछ सागर में भी पायी जाती हैं। यह ऐसे पानी में उन स्थानों पर रहना अधिक पसन्द करती हैं, जहाँ बहुतायत से जलीय पौधे हों। इसके मुँह पर बिल्ली की तरह तीन जोड़े मूँछे होती हैं। इसलिए इसे बिल्ली मछली कहते हैं। बिल्ली मछली दिन के समय पानी की तलहटी में पड़ी रहती है, अत: दिखाई नहीं देती। रात के समय यह पानी की सतह पर आ जाती है।

यूरोप की बिल्ली मछली को सिल्यूरस, शीटफिश और वेल्स आदि नामों से पुकारते हैं। यह विश्व की सबसे बड़ी बिल्ली मछली है। इसकी लम्बाई 2.75 मीटर होती है। इसके एक जोड़े से अधिक पूँछे होती हैं तथा इन्हें यह अपनी इच्छा से हिला-डुला भी सकती हैं।

अफ्रीका के उष्णकटिबन्धीय भागों में एक अद्‌भुत बिल्ली मछली पायी जाती है। इसे उल्टी बिल्ली मछली कहते हैं। यह सामान्य रूप से तैरते हुए अचानक मुड़ जाती है और उल्टी होकर तैरने लगती है। इसी तरह लियो कैसिस स्पइमेनसिस और लियो कैसिस पीसिलोप्टियस नामक बिल्ली मछलियां तैरती तो सीधी हैं किन्तु ये पानी में खड़े-खड़े आराम करती हैं। अफ्रीका के कुछ भागों में विद्युत पैदा करने वाली ईल मछली के समान विद्युत बिल्ली मछली भी पायी जाती है। यह एक खतरनाक मछली है।

दक्षिण अमरीका की एकेन्थोडोरास स्पाईनोसीसिमस नामक बिल्ली मछली बड़ी सुस्त और आलसी होती है। यह दिन भर पानी की तलहटी में रेत के भीतर दबी पड़ी रहती है। इस समय इसका केवल सिर बाहर रहता है। इस बिल्ली मछली को दिन के समय यदि पानी के बाहर निकाला जाये तो यह सुअर की तरह गुर्राने की आवाज निकालती है।

भारत और बर्मा में टेंगारा और चाकाचामा नामक दो बिल्ली मछलियां पायी जाती हैं। इनमें टेंगारा अत्यन्त सुन्दर मछली है। इसके शरीर का रंग हरा-पीला होता है एवं पीठ कत्थई होती है। दूसरी बिल्ली मछली चाकाचामा की लम्बाई 20 सेंटीमीटर तथा शरीर पर कत्थई रंग के चकत्ते होते हैं। चाकाचामा का शरीर बहुत चपटा तथा सिर बड़ा होता है। इसमें बहुत अच्छा कॉमाफ्लास होता है। चाकाचामा को अपने कॉमाफ्लास पर इतना अधिक

विश्वास होता है कि छूने पर यह पत्थर की तरह पड़ी रहती है।

बिल्ली मछली का प्रमुख भोजन छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, मेढक, क्रस्टेशियन और मछलियां हैं। यह दिन के समय पानी के तल में पड़ी रहती है और अपनी मूँछों से जमीन खोद-खोदकर छोटे-छोटे अरीढ़धारी जीव खाती है तथा रात में शिकार की खोज में निकलती है। यूरोप की वेल्स केट फिश तथा इसी प्रकार की कुछ बड़ी बिल्ली मछलियां छोटे-छोटे पक्षियों और स्तनधारी जीवों का शिकार करती हैं। वेल्स बिल्ली मछली बड़ी पेटू होती है। यह एक खतरनाक बिल्ली मछली है तथा भेड़ और बकरी के बच्चों के साथ ही मानव के बच्चे तक खा जाती है। सोलहवीं सदी के विख्यात लेखक जेसनर ने एक ऐसी वेल्स मछली का सन्दर्भ दिया है, जिसके पेट में एक वयस्क मानव का सिर और सोने की अंगूठियों सहित हाथ मिला था।

बिल्ली मछली की कुछ जातियों के चूसने वाले मुँह होते हैं। ये प्राय: पहाड़ी क्षेत्रों में बहने वाली नदियों में चट्टानों को पकड़कर लटकी रहती हैं और काई खाती हैं। इस प्रकार बिल्ली मछलियां एक्वेरियम के लिए बड़ी उपयोगी होती हैं। ये एक्वेरियम की सारी काई साफ कर देती हैं जिससे इसमें गन्दगी एकत्रित नहीं होने पाती।

बिल्ली मछली का प्रजननकाल मई से प्रारम्भ होता है और जून तक चलता है। इस काल में नर और मादा उथले पानी में आ जाते हैं और अपनी पूँछ की सहायता से मिट्टी में एक गड्ढा तैयार करते हैं। इसी गड्ढे में एक बड़ी मादा एक लाख तक अण्डे दे सकती है। अण्डे देने के बाद मादा बिल्ली मछली स्वतन्त्र हो जाती है और नर अण्डों की रक्षा करता है। कुछ जातियों में नर और मादा दोनों मिलकर अण्डों की रक्षा करते हैं।

बिल्ली मछली की एक विशिष्ट जाति पायी जाती है एस्प्रीडीनिकथिस टिबिकेन। इसकी पूँछ असाधारण रूप से लम्बी होती है। कभी-कभी तो इसकी पूँछ इसके शरीर से तीन गुना तक लम्बी देखी गई है। प्रजनन काल में इस बिल्ली मछली की मादा के शरीर पर संस्पर्शिकाओं (टेन्टकिल्स) की तरह पेंच उभर आते हैं। इसके अण्डे इन्हीं पेचों पर लटके रहते हैं। कैलिकथिस नामक 16 सेंटीमीटर लम्बी बिल्ली मछली पत्तों के नीचे हवा के बुलबुलों का घोंसला तैयार करती हैं तथा इसी में अण्डे देती है। इसमें हमेशा नर अण्डों की सुरक्षा करता है। इस काल में इसे परेशान किया जाये तो यह सुअर के समान आवाज निकालती है। इसके नवजात बच्चे टेडपोल जैसे होते हैं और इनका रंग काला होता है।

सागर में पाई जाने वाली एरिडाई परिवार की बिल्ली मछलियों के अण्डे बहुत बड़े आकार के होते हैं। कुछ जातियों की मादा बिल्ली मछलियों के अण्डों का आकार तो ढ़ाई सेंटीमीटर तक होता है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें नर हमेशा अपने मुँह में अण्डे सेता है। एक माह में अण्डों से बच्चे निकलते हैं। इस काल में यह पूरे समय कुछ नहीं खाता। अण्डों से बच्चे निकलने के बाद भी यह उनकी सुरक्षा करता है तथा खतरा निकट होने पर अपने बच्चे को पुन: मुँह में भर लेता है।

बिल्ली मछली एक रोचक जलचर है। इसकी बहुत सी जातियों पर शोध किये जा रहे हैं तथा आशा की जाती है कि शीघ्र ही इनके सम्बन्ध में और भी रोचक एवं विलक्षण तथ्य प्राप्त होंगे।

बाल कहानी : गोविन्द भारद्वाज

# सुन्दरता का घमण्ड

सुन्दरवन में चीकू नाम का एक खरगोश रहता था। वह अत्यन्त सुन्दर था। अपनी सुन्दरता के कारण ही वह अन्य जानवरों से दूर रहता था।

एक दिन मोटू भालू सुबह की सैर पर निकला हुआ था। उसे रास्ते में चीकू मिल गया। चीकू ने उसे देखकर मुँह फेर लिया। मोटू ने उसे टोकते हुए पूछा– क्यों चीकू मुझसे नजर बचाकर कहाँ जा रहे हो?

–मैं काले और मोटे लोगों के मुँह नहीं लगता।– चीकू ने तपाक् से कहा।

मोटू भालू अपमान का घूंट पीकर चुपचाप अपने रास्ते पर चल दिया।

अगले दिन चीकू नदी किनारे हरी-हरी दूब खाने में लगा हुआ था। वहाँ पानी पीने के लिए हाथी दादा अपने परिवार के साथ आ गये। हाथी दादा को देखकर भी चीकू अपना पेट भरने में लगा रहा। दादा ने पूछा– अरे, चीकू जी बहुत बड़े हो गये हो जो नमस्ते, 'गुड मोर्निंग' भी नहीं करते?

चीकू ने हाथी दादा की बात अनसुनी कर दी। फिर दादा ने पूछा– क्यों भई हमसे क्या नाराजगी है?

चीकू बोला– मैं पर्वत से मोटे-भद्दे शरीर और अजगर जैसी सूंड वाले जानवरों से बातचीत नहीं करता। तुम्हारे बड़े-बड़े दांत कितने खराब लगते हैं ... छी ...।

हाथी दादा को चीकू का जवाब सुनकर बड़ा क्रोध आया किन्तु वह उसे छोटा जानवर समझकर कुछ नहीं कह सके। बस इतना अवश्य कहा– छोटा मुँह और बड़ी बात।

चीकू नदी में अपनी सुन्दर परछाई देखकर फूला नहीं समा रहा था। शाम को हाथी दादा और मोटू भालू ने जब कालू लंगूर को चीकू की हरकतों के बारे में बताया तो उसे यकीन नहीं हुआ। वह उससे मिलने चीकू के घर पहुँच गया।

–चीकू घर में हो क्या?– कालू ने आवाज लगाई। खरगोश की पत्नी बाहर आई और बोली– वे तो बाजार गये हुए हैं।

कालू लंगूर वापस चल दिया। थोड़ी दूर जाकर उसे ऐसा लगा कि चीकू की पत्नी झूठ बोल रही है। वह पुन: चीकू के घर पहुँचा। चीकू घर में आराम कर रहा था। कालू को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। उसने चीकू से कहा– अबे घर में होकर भी अपने आपको घर में न होने की झूठी बात कहता है। तुझे शर्म नहीं आती।

–तुम्हें मुझसे क्या काम है?– चीकू ने पूछा।

–मैंने सुना है कि तू अपने आपको बड़ा सुन्दर समझता है और दूसरे जानवरों को कुरूप। इसलिए

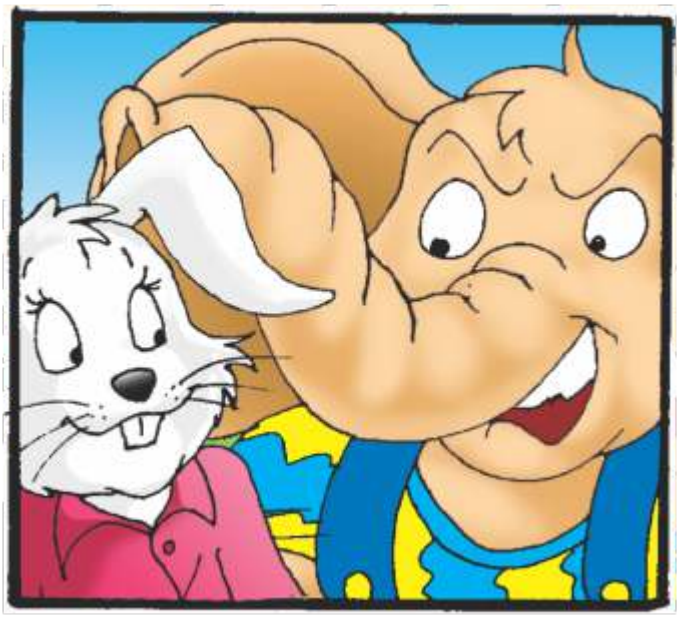

किसी से बातचीत भी नहीं करता।– कालू ने उसे डांटते हुए कहा।

–हाँ... हाँ... हाँ... मैं अपने आपको सुन्दर समझता हूँ और समझता क्या हूँ, मैं हूँ ही तुम सब से सुन्दर। तुम्हारी तरह मेरा मुँह काला नहीं है और न ही तुम जैसी मेरी मोटी रस्से-सी पूँछ है। देखो मेरी सफेद मुलायम त्वचा। भूरी-भूरी, गोल-गोल आँखें और छोटे-छोटे सुन्दर पैर।– चीकू ने अपनी विशेषताएं गिनवाते हुए कहा।

कालू लंगूर समझ गया कि सचमुच चीकू को अपनी सुन्दरता पर बहुत घमण्ड हो गया है। वह चुपचाप वहाँ से अपने घर लौट गया। अगले दिन कालू ने सभी जानवरों की सभा बुलवाई। उस सभा में हाथी, भालू, बंदर, गीदड़, लोमड़ी, गैंडा और लंगूर आदि उपस्थित थे। हाथी दादा ने चीकू खरगोश को सुन्दरवन की एकता को तोड़ने वाला प्राणी बताते हुए कहा– चीकू को जंगल के प्राणियों की बिरादरी से बाहर निकाल देना चाहिए।

कालू भालू ने कहा– चीकू हमारे सुन्दरवन में नस्लवाद व रंगभेद नीति को बढ़ावा दे रहा है। अत: उसके खिलाफ कठोर कदम उठाना जरूरी है।

अन्त में कालू लंगूर ने प्रस्ताव पढ़कर सभी को सुनाया। जिसमें लिखा था कि– चीकू हमारी एकता व अखण्डता के लिए खतरा है। यह प्राणी रंगभेद नीति पर चल रहा है। गोरे और काले का भेदभाव रखता है। अत: उसे सुन्दरवन की बिरादरी से बाहर किया जाता है।

चीकू को जब यह सूचना भिजवायी गयी तो वह और ज्यादा खुश हुआ।

एक दिन सुन्दरवन में कुछ शिकारी घुस आए और उनके साथ आठ-दस शिकारी कुत्ते भी थे। उन शिकारी कुत्तों को अचानक चीकू खरगोश दिखाई दे गया। वे सब के सब उसके पीछे दौड़ पड़े। चीकू लम्बी छलांग लगाता हुआ आगे-आगे भाग रहा था। कुत्तों और चीकू के बीच फासला कम रह गया था। अचानक चीकू को मोटू भालू का घर दिखाई दिया। वह झट से उसी में घुस गया। मोटू ने जब चीकू को देखा तो वह गुस्से में बोला– तू सुन्दर प्राणी मोटू और कालू प्राणी के घर क्या करने आया है? चल यहाँ से निकल...।

–जरा मेरी बात सुनो भालू दादा।– हांफते हुए चीकू ने कहा।

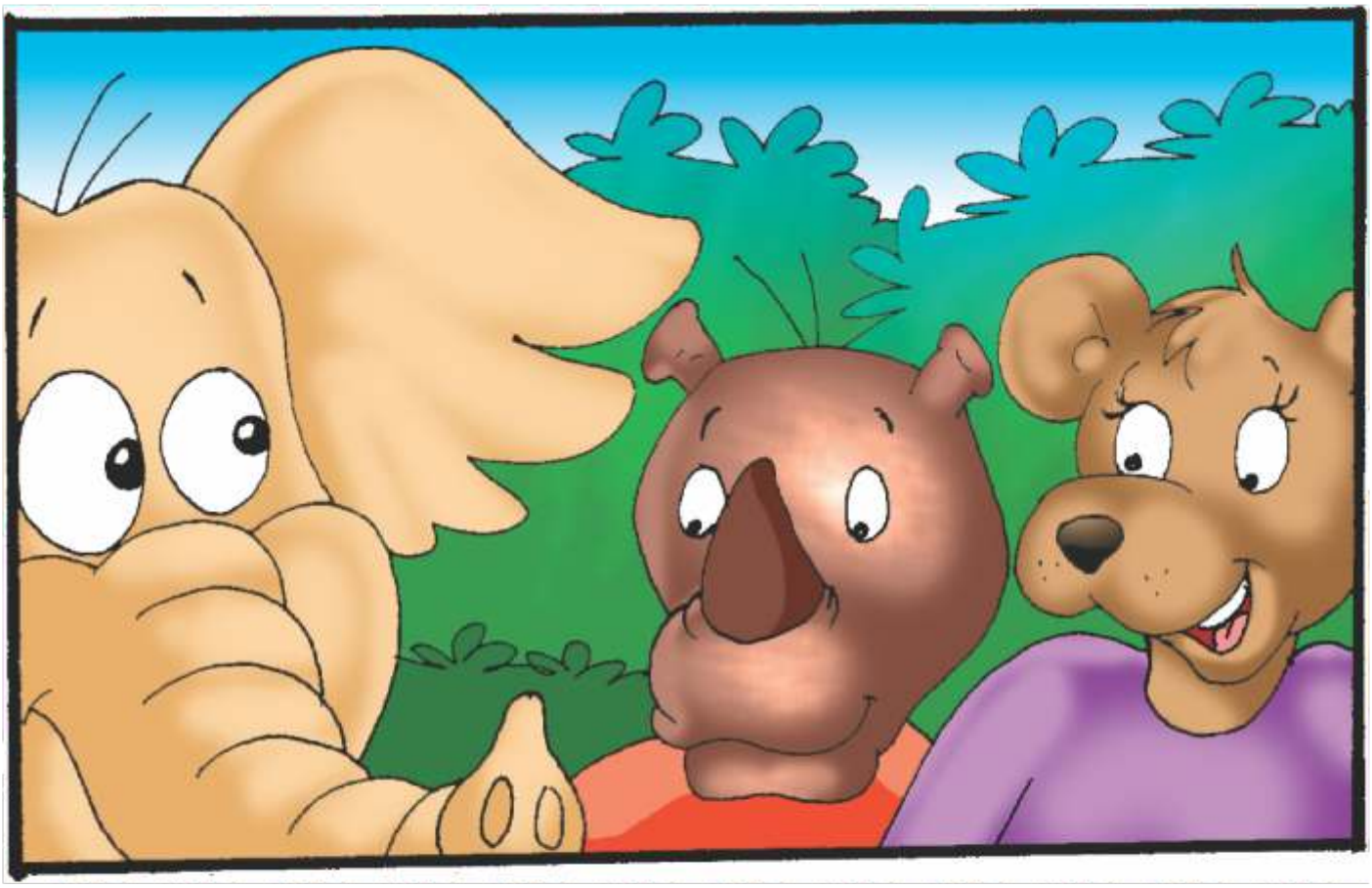

—मैं कुछ नहीं सुनना चाहता।— मोटू ने कहा। चीकू ने मोटू के दोनों पैर पकड़ लिए और बोला— मेरे पीछे आठ–दस शिकारी कुत्ते पड़े हैं। आज तुम मुझे अपने घर से निकाल दोगे तो वे मुझे मार डालेंगे। मुझे क्या मालूम था दादा कि मेरी सुन्दरता ही मेरी जान की दुश्मन बन जायेगी। आप बड़े दयालु हो दादा मुझ पर दया करो।— चीकू रोने लगा। मोटू भालू को दया आ गयी। वह बोला— ठीक है, तुम यहीं ठहरो मैं बाहर जाकर देखता हूँ।

चीकू ने राहत की सांस लेते हुए कहा— 'जान बची लाखों पाए।'

भालू जैसे ही बाहर आया उसे देखकर सारे शिकारी कुत्ते दुम दबाकर भाग गये। मोटू भालू ने सभी जानवरों को अपने घर बुलवा लिया। थोड़ी ही देर में सब जमा हो गये। भालू ने चीकू की सारी कहानी उनके सामने दोहरा दी। सभी जानवरों का गुस्सा चीकू को भीगी बिल्ली बने हुए देखकर ठण्डा हो चुका था। सभी ने उसे माफ कर दिया।

चीकू खरगोश ने सभी का आभार जताया और सुन्दरवन के नियमों पर चलने को तैयार हो गया। उसके सिर से सुन्दरता का भूत उतर चुका था।

विशेष लेख : दिनेश दर्पण

# कैसे बना दुनिया का पहला पुस्तकालय?

**आज** से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व असीरिया में एक राजा था। उसे विद्वानों को दरबार में बुलाने, उनसे ज्ञान की बातें सुनने व उनका सम्मान करने का बहुत शौक था। दूर-दूर से विद्वान और कलाकार उसके दरबार में सम्मान पाने के लिए आते। राजा इस बात से परेशान रहता था कि वह विद्वानों द्वारा कही गई सभी बातों को याद नहीं रख पाता था। इसका कोई उपाय भी उसके पास नहीं था।

एक दिन प्रातः जब वह सैर करने के लिए जा रहा था। कुम्हार द्वारा बनाये गये मिट्टी के बर्तन अलाव में पक रहे थे। यह तरीका राजा को पसन्द आ गया। अपने राजमहल में वापस लौटकर राजा ने बहुत से कुम्हारों को इस दिशा में अपनी योजनानुसार काम पर लगा दिया। मिट्टी की चिकनी और चौकार पट्टियां बनाई जाने लगीं। दरबार के विद्वानों ने उन पर लोहे की सलाइयों से नीतिवाक्य, धर्मग्रंथ व कानून सम्बन्धी बातें लिखीं यह भाषा चित्रलिपि जैसी थी। इन पट्टियों को अलाव में पकाकर उन्हें सुन्दर बनाने के लिए विभिन्न रंगों से रंगा गया।

इस प्रकार असीरिया के राजा ने ग्रंथों को सुरक्षित रखने का उपाय खोज लिया था। यही संसार का पहला पुस्तकालय था। कहा जाता है कि उसके पास इस तरह की बीस हजार से भी अधिक पट्टियां थीं। असीरिया में ऐसी अनेक पट्टियां खुदाई में मिली हैं। इससे पूर्व गुरु अपने शिष्यों को, पिता अपने पुत्रों को धर्मग्रंथ, आचार-संस्कार, वेद-पुराण आदि बचपन से ही रटाना शुरू कर देते थे। सभी ग्रंथ बस याददाश्त पर ही सुरक्षित थे। ऐसा करने से उनकी भाषा व अर्थों में बदलाव भी आ जाता था। असली मंत्र और ग्रंथ समय के साथ बदल जाते या फिर उन्हें भुला दिया जाता।

सिकन्दर ने मिस्र में ग्रंथों को सुरक्षित रखने का दूसरा उपाय खोज निकाला था। वह था पैपाइरस नाम के सरकण्डे के गूदे को पीट-पीटकर चपटा कर दिया जाता। फिर उन्हें आपस में जोड़कर एक लम्बी पट्टी बना लेते। इसके सिरों पर लकड़ी लगी रहती थी। इन्हें स्क्रोल कहते थे। एक तरफ खोलकर पढ़ते जाते और दूसरी तरफ से लपेटते जाते थे। धनवान लोग लकड़ी की जगह हाथी दांत, सींग व चन्दन की लकड़ी लगवाते थे। सिकन्दर द्वारा सिकन्दरिया नगर में बनाया गया यह दुनिया का दूसरा पुस्तकालय था। पुस्तकों के ये सभी रूप पूरी तरह सुरक्षित नहीं थे। हवा, पानी व धूप का समय के साथ-साथ इन पर प्रभाव पड़ता था और सूखकर झड़ जाते थे या पानी में गल जाते थे। अतः इनको बार-बार लिखना पड़ता था। हमारे देश भारत में कुछ समय तक चमड़े पर भी लिखा जाता था।

इन पुस्तकों को हाथ से लिखने में समय और मेहनत अधिक लगती थी। इसलिए इनकी संख्या कम थी। मध्यकाल तक पुस्तक हाथ से लिखी जाती रही। इसलिए इन्हें सम्भालकर रखना पड़ता था। इसी तरह की किताबों को अलग-अलग जंजीरों से बांधकर रखा जाता था। जंजीरों का दूसरा सिरा अलमारियों से जुड़ा रहता था। इस प्रकार स्क्रोल या भोजपत्रों की इन पुस्तकों को अधिक दूर तक ले जाना सम्भव नहीं था। ये पुस्तकालय चेन लायब्रेरी कहलाते हैं। इस तरह की चेन लायब्रेरियां इंग्लैंड में अधिक प्रचलित थीं। ●

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

# विज्ञान प्रश्नोत्तरी

**प्रश्न :** अधिक देर तक धूप में बैठने से शरीर का रंग काला क्यों पड़ जाता है?

**उत्तर :** धूप में मनुष्य का शरीर गहरे रंग के वर्णक बनाता है। ये वर्णक सूर्य के प्रकाश की किरणों को सोख लेते हैं। यदि शरीर में प्रकाश-किरणों को सोख लेने वाले वर्णक बनाने की शक्ति न होती तो सूर्य की गर्मी के कारण त्वचा झुलस जाती। अधिक तेज धूप में शरीर अधिक वर्णक बनाता है। बस, यही कारण है कि देर तक धूप में बैठने से शरीर का रंग काला पड़ने लगता है।

**प्रश्न :** सर्दी में तुम कंपकंपी का अनुभव क्यों करते हो?

**उत्तर :** सर्दी के मौसम में तापमान की गिरावट से वातावरण ठण्डा हो जाता हैं। अत: तुम कंपकंपी का अनुभव करने लगते हो। दरअसल, कंपकंपी होने से मांसपेशियों को अधिक कार्य करना पड़ता है जिसके फलस्वरूप ऊर्जा उत्पन्न होती है। इस प्रकार शरीर का ताप समान अर्थात् 37 डिग्री सेंटीग्रेड बना रहता है और यह कम नहीं हो पाता।

**प्रश्न :** पहाड़ों पर दाल क्यों नहीं गलती है?

**उत्तर :** हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं, वहाँ का वायु का दबाव अत्यधिक है। जानते हो हमारे शरीर पर भी निरन्तर 14 टन वायु का दबाव सदैव पड़ता रहता है। जैसे-जैसे हम ऊँचाई पर जाते हैं, इस दबाव में कमी आने लगती है। पहाड़ों पर भी वायु का दबाव कम हो जाता है। दाल को पकाने में यही वायुमण्डलीय-दाब कार्य करता है। चूंकि पहाड़ों पर वायुमण्डलीय-दाब कम होता है। अत: दाल पकाने में कठिनाई होती है।

**प्रश्न :** तारे क्यों टिमटिमाते हैं?

**उत्तर :** हम जिस वायुमण्डल में सांस लेते हैं, उसमें विभिन्न घनत्व वाली अनेक परतें पाई जाती हैं। इन्हीं परतों से गुजरकर तारों का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचता है। वायु के कारण वायुमण्डल की परतें भी हिलती रहती हैं। यही कारण है कि जब तारों का प्रकाश इन परतों से गुजरकर पृथ्वी तक आता है तो तारे टिमटिमाते हुए नजर आते हैं।

**प्रश्न :** वैल्डिंग के लिए ऑक्सी-एसीटिलीन ज्वाला का प्रयोग क्यों किया जाता है?

**उत्तर :** लोहा साधारण ताप पर नहीं पिघलता है। इसके लिए अधिक ताप का होना आवश्यक है। ऑक्सी-एसीटिलीन की ज्वाला का तापमान 3000°C होता है। इस ताप पर लोहे के टुकड़े आदि पिघल जाते हैं जिससे उन्हें वैल्डिंग करने में सुविधा होती है। अत: वैल्डिंग करने के लिए ऑक्सी-एसीटिलीन ज्वाला का प्रयोग किया जाता है।

# किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

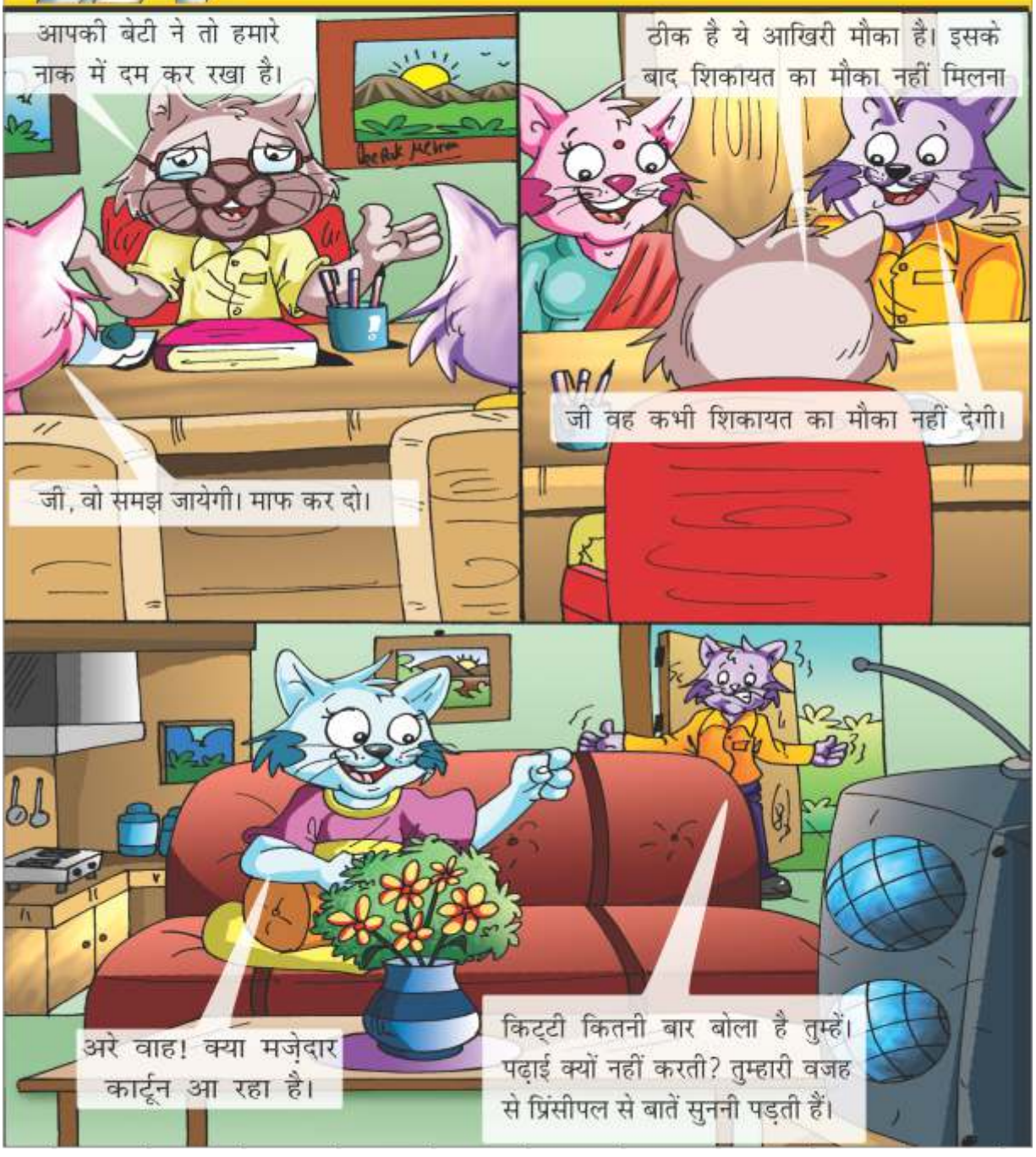

किट्टी, मैं तुम से कह रही हूँ और तुम हो कि टी.वी. देख रही हो। किट्टी तुम बहुत ही लापरवाह होती जा रही हो।
चलो अभी मेरे साथ और पढ़ो।
माँ, बस थोड़ी देर और...
चलो अभी तुम मेरे साथ ऐसे नहीं मानोगी।
मुझे अभी नहीं पढ़ना।
अगले दिन सुबह...

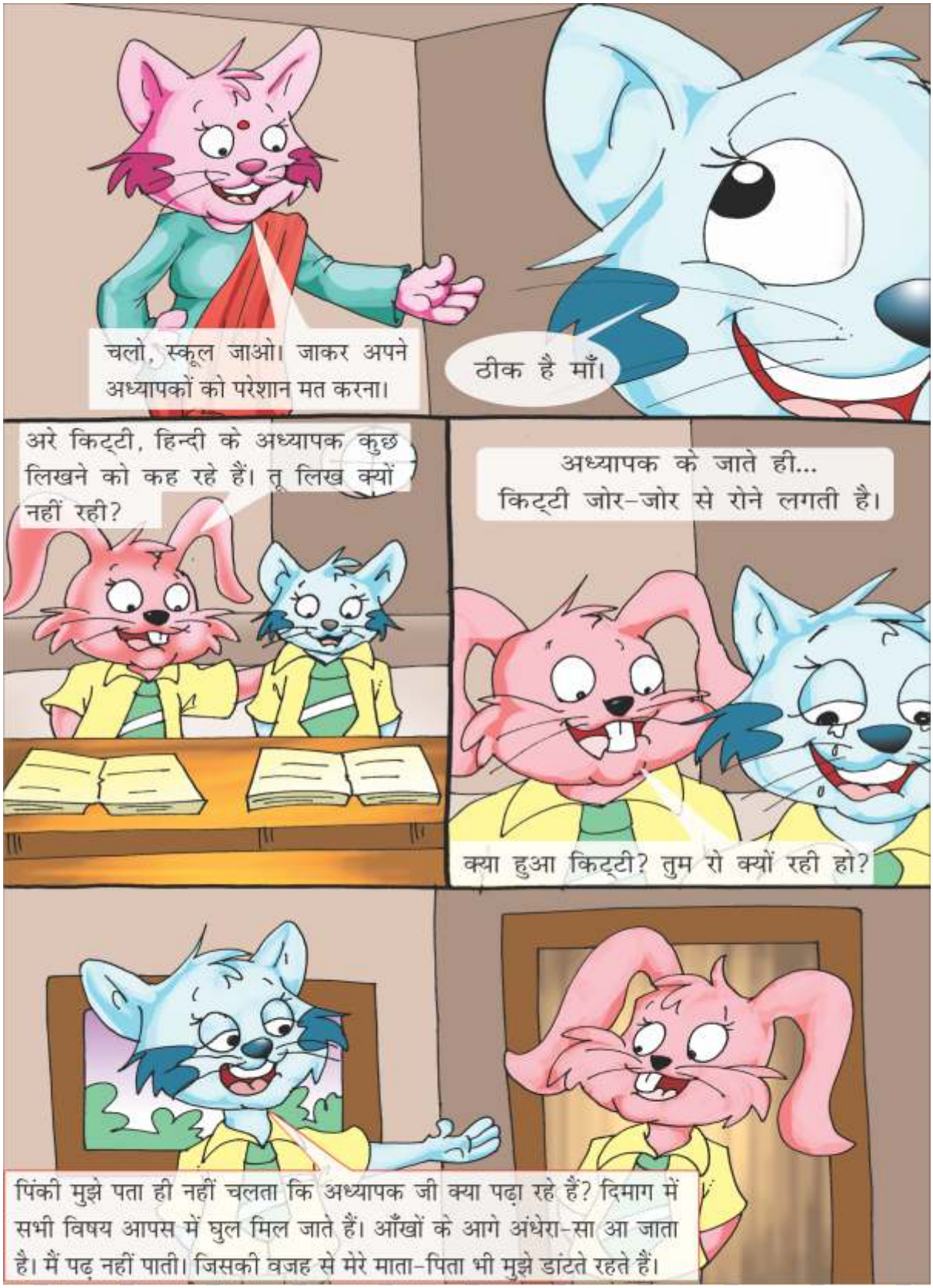
चलो, स्कूल जाओ। जाकर अपने अध्यापकों को परेशान मत करना।
ठीक है माँ।
अरे किट्टी, हिन्दी के अध्यापक कुछ लिखने को कह रहे हैं। तू लिख क्यों नहीं रही?
अध्यापक के जाते ही...
किट्टी जोर-जोर से रोने लगती है।
क्या हुआ किट्टी? तुम रो क्यों रही हो?
पिंकी मुझे पता ही नहीं चलता कि अध्यापक जी क्या पढ़ा रहे हैं? दिमाग में सभी विषय आपस में घुल मिल जाते हैं। आँखों के आगे अंधेरा-सा आ जाता है। मैं पढ़ नहीं पाती। जिसकी वजह से मेरे माता-पिता भी मुझे डांटते रहते हैं।

तुम परेशान मत हो किट्टी, सब ठीक हो जाएगा।
पिंकी, किट्टी की परेशानी के बारे में अपनी माँ को बताती है।
माँ सुनते ही।
बेटी किट्टी तो डिस्लेक्सिया (Dyslexia) से पीड़ित है।
माँ वो क्या होता है?
बेटा, यह एक बीमारी है। जिसकी वजह से बच्चे पढ़ नहीं पाते हैं क्योंकि वे बहुत धीरे-धीरे सीखते हैं। उन्हें बहुत ही प्यार से पढ़ाना और सिखाना पड़ता है।
पिंकी अगले ही दिन किट्टी के घर गई और किट्टी के माता-पिता को इस बीमारी के बारे में सब कुछ बताती है।
किट्टी के माता-पिता अपनी गलती का एहसास करते हैं और पिंकी का धन्यवाद करते हैं। अब वे किट्टी को बहुत ही प्यार और स्नेह से रखते हैं।

संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

# कभी न भूलो

★ भक्ति ही सच्ची शक्ति है।

★ सन्तोष से मीठी संसार में कोई वस्तु नहीं।

★ सत्य मार्ग पर चलकर मनुष्य सर्वोत्तम तरक्की कर सकता है।

★ साहस एक समुद्र है जो सफलता को सींचता है। – प्रेमचंद

★ भाग्य साहसी का मित्र है। – सिसरो

★ स्वयं को जानो। – सुकरात

★ महान पुरुष वह है, जिसके उद्देश्य महान हैं। – ईमन्स

★ शिक्षा मानव और समाज का सबसे बड़ा आधार है। – डॉ. राधाकृष्णन

★ सच्चे हृदय से निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता।

★ आनन्द आदमी के अन्दर ही है यह पूर्णता तथा सत्य की तलाश से मिलता है। – महात्मा गाँधी

★ केवल निर्मल हृदय ही पूर्ण उल्लास जानता है। – सेटे

★ कर्तव्य और वर्तमान हमारा है, फल और भविष्य परमात्मा का। – होरेस

★ स्नेह ईश्वर का सर्वोत्तम वरदान है। – वाल्टेयर

★ पक्षपात सभी बुराइयों की जड़ है।

★ अपना दोष ढूंढ निकालना ज्ञानीजनों का कार्य है। – स्वामी विवेकानन्द

★ टाल-मटोल करने वाला व्यक्ति सदा दुर्भाग्य से भिड़ा रहता है। – टिसियड

★ क्रोध को क्षमा से जीतो।

★ जो जान गया कि उससे भूल हो गयी है और उसका सुधार नहीं कर रहा है तो एक और भूल हो रही है। –कन्फ्यूशियस

★ धन जमा करने में अपनी उम्र मत खो, धन कंकड़ है और उम्र मोती। – शेखसादी

★ यदि हमारी आँखें शाश्वत पर होंगी तो निश्चित ही बुद्धि भी अनवरत विकसित होगी। – एमर्सन

★ इन्सान द्वारा रूह (सूरत) पर विजय प्राप्त कर जाना ही उसकी सच्ची विजय है। – प्रेम उपदेश

★ झगड़े से बचना उचित है। अगर उसमें पड़ जाएं तो बैरी को अपना तेज, बल और पौरूष दिखा दें। – शेक्सपीयर

★ अहमियत इस बात की नहीं कि हम कितना जीयें बल्कि इस बात की है कि हम कैसे जीयें। – वेली

★ घमण्ड से आदमी फूल सकता है फैल नहीं सकता।

★ अक्लमंद आदमी बोलने से पहले सोचता है, बेवकूफ बोल लेता है और तब सोचता है कि वह क्या कह गया? – रस्किन

★ विद्या सबसे अनमोल धन है। इसके आने मात्र से ही सिर्फ अपना ही नहीं अपितु पूरे समाज का कल्याण होता है। – ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

★ ईमानदारी से बढ़कर कोई पैतृक सम्पत्ति नहीं।

★ इन्सान के अन्दर छुपी सच की शक्ति ही भगवान की शक्ति है।

★ जो समय की कद्र करता है। समय उसकी कद्र करता है। – अज्ञात

बाल कविता : सुदीप

# अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे जल्दी उठकर,
होते हैं तैयार।
सबसे पहले माता-पिता का,
करते हैं सत्कार।

अच्छे बच्चे अपना मन,
पढ़ने में खूब लगाएं।
हर पल सच्चाई के पथ पर,
आगे बढ़ते जाएं।

अच्छे बच्चे भूले से भी,
नहीं कभी झगड़ते।
मीठा बोलें, मिल-जुल बैठें,
प्यार सभी से करते।

आओ हम भी दिखलाएं,
बनकर सब अच्छे बच्चे।
हर पल जीवन के पथ में हों,
कर्म हमारे सच्चे।

बाल कविता : दिनेश दर्पण

# प्यारे फूल

कांटों में रहकर जीना,
दर्द सभी हरदम पीना।

करते नहीं कभी भी भूल,
नित मुस्कुराते प्यारे फूल।

फूलों से मुस्काना सीखो,
कर्कश वाणी में न चीखो।

सैनिक के चरणों की धूल,
सिर पर रखते प्यारे फूल।

सभी बड़ों का यह कहना है,
कोमल सर्वोत्तम गहना है।

कहानी : साबिर हुसैन

# मर गया सांप

**वीना** लॉन में घास पर बैठी पत्रिका पढ़ रही थी। उसने देखा सलीम फाटक खोलकर अन्दर आ रहा था। उसने आते हुए सलीम को देखा और दूसरी ओर देखने लगी। वह नहीं चाहती थी कि सलीम उसे देखकर उसकी ओर आये। सलीम उसके पड़ोस में ही रहता है। उसके अब्बू की बाजार में फलों की दुकान है। सलीम उसके घर आता-जाता रहता है। एक-दो बार मम्मी ने उससे कुछ सामान मंगाया तो उसने ला दिया। मम्मी ने उसे कुछ खाने के लिए दे दिया। उसके बाद जब भी बुलाती सलीम तुरन्त आ जाता। सलीम उसे दीदी कहता है लेकिन उसे पसन्द नहीं। उसे सलीम का घर में आना-जाना भी अच्छा नहीं लगता। उसे लगता कि वह उसे इधर-उधर के प्रश्न पूछकर परेशान करेगा और उसकी पढ़ाई में डिस्टर्ब होगा। एक-दो बार वह उसके कमरे में कोई प्रश्न समझने आ भी गया तो उसने झिड़क कर उसे भगा दिया। मम्मी ने उसे कई बार समझाया कि वह दीदी-दीदी कहता है और तुम उसे डांट देती हो।

–मम्मी, ऐसे लड़के मौका पाते ही माल उड़ा ले जाते हैं। पहले वाले माली का लड़का मेरी सोने की चेन चुरा ले गया था।– उसने मम्मी से कहा था।

–सब एक जैसे नहीं होते।– मम्मी ने कहा।

वीना मम्मी की बात सुनकर चुप हो गई लेकिन वह अब किसी पर विश्वास नहीं करती। वीना के पापा बड़े अधिकारी हैं। पिछले दिनों उनका यहाँ स्थानांतरण हुआ है। उसका बड़ा भाई विश्वविद्यालय में पढ़ रहा है। वह छात्रावास में रहता है और छुट्टियों में घर आता है।

–दीदी, आंटी ने पकौड़ी बनाई है, लो गर्म-गर्म खाओ।– सलीम पकौड़ियों की प्लेट उसके आगे रखते हुए बोला।

वीना की इच्छा हुई कि सलीम को डांट दें कि वह उसे पढ़ने दे लेकिन गर्मागर्म पकौड़ियों की खुशबू ने उसे मुँह बंद रखने के लिए मजबूर कर दिया।

सलीम भी पढ़ता है और छुट्टी होते ही घर आ जाता है। उसे पेड़-पौधे लगाना बहुत अच्छा लगता है। लॉन के किनारे लगे तमाम फूलों के पेड़ सलीम ने ही लाकर लगाये हैं। उसके पापा को भी सलीम अच्छा लगता है। जब वह फल या मिठाई लाते हैं तो सलीम को जरूर देते है। और जब सलीम अपनी दुकान से फल लाता है तो लेकर जरूर आता है। सलीम फल वीना की मम्मी को देता है। वह जानता है कि वह उससे फल नहीं लेगी।

एक बार वीना के पापा बाहर गये हुए थे तभी उसकी मम्मी की तबियत खराब हो गई थी। उन्हें तेज बुखार आ गया था। मम्मी की हालत देखकर वह घबरा गई

थी। फोन भी खराब था। वह घबराहट में रोने लगी थी। तभी सलीम आ गया था। उसने मम्मी की हालत देखी तो दौड़कर अपनी अम्मी को बुला लाया था। वह उसकी मम्मी के माथे पर पानी की पट्टी रखने लगी थी। तभी सलीम डॉक्टर को बुला लाया था। रात में भी सलीम और उसकी अम्मी घर में रहकर उसकी मम्मी की देखभाल करती रही थीं। जब मम्मी की तबियत ठीक हो गई थी तभी सलीम की अम्मी गई थी।

कुछ दिन तो वह सलीम से ठीक से बोलती रही लेकिन फिर उसे सलीम का घर में आना बुरा लगने लगा था।

वीना लॉन में लेटी पकौड़ी खाते हुए किताब पढ़ने में मगन थी। झाड़ी में से निकल आये सांप को उसने नहीं देखा था जो धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहा था। अन्दर से सलीम चाय लेकर बाहर आया तो उसने वीना की ओर बढ़ते सांप को देखा तो वह कांपकर रह गया। सांप वीना के पास पहुँच चुका था। सलीम समझ गया जरा-सी हलचल होने पर सांप वीना को काट लेगा। वह तेजी से आगे बढ़ा और गर्म चाय सांप पर डाल दी। सांप तेजी से पलटा। कुछ गर्म चाय वीना पर पड़ी तो वह क्रोधित होकर घूमी। उसे लगा सलीम ने उस पर चाय जानबूझकर डाली है लेकिन सांप को देखकर उसकी जान सूख गई। सांप तेजी से सलीम की ओर बढ़ रहा था।

—बचना भैया— वीना चिल्लाई और पास पड़ी लकड़ी उठाकर सलीम की ओर जाते सांप को मार दी। सांप वीना की ओर घूम पड़ा। सांप को अपनी ओर बढ़ते देख वीना भय से वहीं खड़ी रह गई। वह भय से थर-थर कांप रही थी।

सलीम फुर्ती से पीछे भागा और एक ओर रखे फावड़े को उठा लिया और आगे बढ़कर सांप को मारा। फावड़े की धार से सांप के दो टुकड़े हो गये। शोर सुनकर वीना की मम्मी भी बाहर आ गई। उन्होंने देखा, सलीम सांप को फावड़े से मार रहा था। सांप के टुकड़े-टुकड़े हो गये।

—मेरे भैया, आज तुमने मुझे बचा लिया।— कहते हुए वीना सलीम के गले लग गई।

मम्मी ने आकर दोनों को गले से लगा लिया।

सांप ही नहीं, वीना के मन का सांप भी मर गया था।

लेख : विभा वर्मा

# एक विशाल जीव हिप्पो

**हिप्पो**, बड़ा ही विचित्र और विशाल जीव है। इसका शरीर बहुत मोटा-ताजा और शक्ल सुअर से मिलती-जुलती है। साधारण हिप्पो 14 फुट तक लम्बा होता है और इसका वजन 120 मन से भी अधिक होता है। इसकी खाल लगभग दो इंच मोटी होती है। इसकी चमड़ी पर कोई नुकीला हथियार भी उसे आसानी से पार नहीं कर सकता। इसे दरियाई घोड़ा भी कहते हैं। हिप्पो का मुँह बड़ा ही डरावना और बड़ा होता है। जब यह मुँह खोलता है तो उसकी लम्बी चौड़ी जीभ एवं नुकीले दांत दिखाई देते हैं। इसके मुँह में हाथी जैसे दो नुकीले दांत भी होते हैं। यह जानवर अधिकतर घास और पत्ते खाता है। लेकिन इसे मिठाई बहुत पसन्द है। गन्ने भी इसे बहुत अच्छे लगते हैं। यह अपना अधिकांश समय पानी में व्यतीत करता है। यह नदियों तथा झील में तेजी से तैर भी सकता है। जब कोई छोटी नाव नदी में जा रही होती है तो यह पानी के अन्दर ही अन्दर उसके पास पहुँच जाता है और अचानक ही उसे उलट देता है। जब यह पानी के भीतर तैरता है तो अपनी आँख और कान दोनों बन्द कर लेता है। यह अधिकतर दलदल में ही रहना पसन्द करता है और जब इसे भूख लगती है तो भोजन की खोज में मैदान में आ जाता है।

अफ्रीकावासी हिप्पो की नाव भी बनाते हैं और उस पर बैठ कर मजे से नदी में सैर करते हैं। वहाँ के लोग नदी में ही हिप्पो को मार डालते हैं। पहले तो उसका भारी शरीर नदी की तलहटी में बैठ जाता है फिर बाद में पानी की सतह पर आ जाता है। इसी पर बैठकर यहाँ के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं।

हिन्दी दिवस पर विशेष, कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

# राष्ट्र की आवाज

जो हम बोलते हैं वह,
बोली सुनो निहार।
भाषा भी कह लो उसे,
व्यक्त भाव आधार।।

लिपि भी होती है बन्धु,
भाषा की पहचान।
देती है लिपि भी सखा,
भाषा को सम्मान।।

आकार देती है सच,
भाषा को लिपि यार।
लिपि भाषा तन-मन रूप,
दोनों को दो प्यार।।

देशवासियों सुनो भी,
हिन्दी का रख मान।
राष्ट्र भाषा का कभी,
नहीं करो अपमान।।

राष्ट्र भाषा देश को,
देती गरिमा ज्ञान।
बढ़ता इससे हमारा,
स्वाभिमान अरु आन।।

संस्कृत सुता है हिन्दी,
दोनों की लिपि एक।
भाषा में अन्तर बहुत,
लिपि में नहीं अभिषेक।।

इस लिपि को कहते सभी,
देवनागरी जान।
बड़ी पुरानी लिपि बन्धु,
है इस पर कुछ ध्यान।।

लिपि के हर वर्ण का सच,
नाम रूप है काम।
नाम सा उच्चारण भी,
बहुत सरल बलराम।।

वैज्ञानिकता है नकुल,
इस लिपि का आधार।
पढ़ना-लिखना एक सा,
अद्‌भुत गुण है यार।।

अन्य लिपियां हैं अजीब,
हैं वर्णों के नाम।
नाम सा उच्चारण ना,
और न उनके काम।।

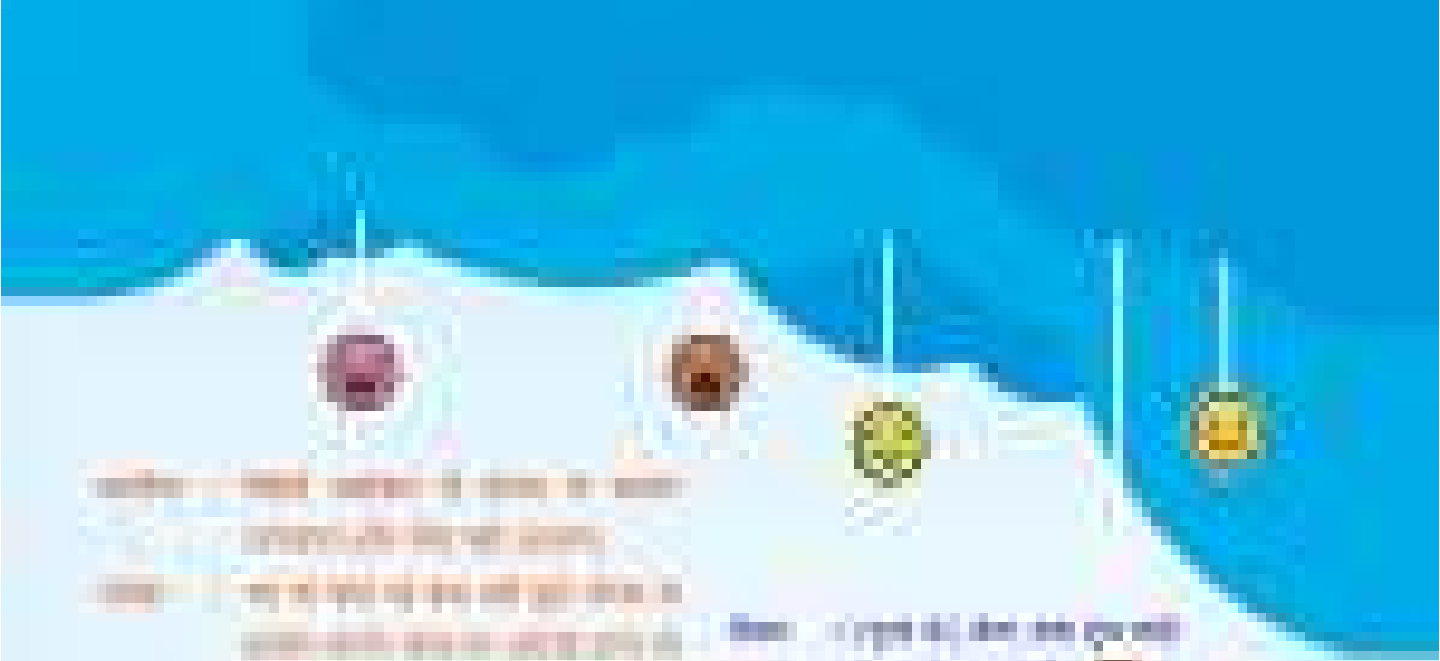

बाल कहानी : दीपांशु जैन

# ठगी महंगी पड़ी

**राजस्थान** के किसी गाँव में रामधन नामक किसान रहता था। सीधा-सादा आदमी था, मगर था बड़ा चतुर। क्या मजाल कि कोई उसे धोखा दे जाए। उसके गाँव में हमेशा पानी की कमी रहती थी। कुआं भी नहीं था। दूर से पानी लाना पड़ता था।

रामधन के पिता हर किसी की बात पर भरोसा कर लेते थे। दूसरों की बात मानकर बेटे से लड़-झगड़ भी पड़ते थे। एक बार रामधन के पिता लड़-झगड़कर कहीं चले गये। हफ्तों तक गाँव वापस नहीं आए। रामधन को चिन्ता हुई। उसने उन्हें ढूंढ लाने का निश्चय किया।

सर्दी का मौसम था। उसने चार कम्बल अपने साथ लिए और पिता को ढूंढने निकला। ढूंढते-ढूंढते वह दूर निकल गया। एक हरा-भरा गाँव था। वह गाँव बारहमासी नदी के किनारे बसा होने के कारण उस गाँव में जल से भरा हुआ एक कुआं था। एक किसान बैलों की सहायता से रहट चला रहा था। रहट के पास ही किसान के तीन साथी बैठे गपशप कर रहे थे। रहट की बाल्टियों (डोलियों) से पानी की धार बहती हुई खेत सींच रही थी।

रामधन ने यह देखा तो आश्चर्य में पड़ गया। इससे पहले उसने रहट नहीं देखा था। उसने पहले तो पानी को छूकर देखा। फिर हाथ धोकर पानी पिया। उसकी थकान दूर हो गई।

रामधन ने किसान से पूछा– भैया, तुम्हारा कुआं बहुत बढ़िया है। परन्तु एक बात समझ में नहीं आई। कौन इस कुएं के अन्दर बैठा इतनी सारी बाल्टियों को भर रहा है? क्या वह थकता नहीं?

रामधन की बात सुनकर किसान हँसकर बोला– बाल्टियों को तेरा बाप भर रहा है। उनके पानी से खेती की सिंचाई हो रही है।

रामधन ने कहा– अच्छा, मेरा बाप यहाँ आ गया। मगर भैया, इस कड़ाके की सर्दी में भी वह कुएं में बैठा बाल्टियों को भर रहा है। क्या उसे ठण्ड नहीं लगती?

रामधन की बात सुनकर इस बार किसान को हँसी आ गई। साथ में बैठे दूसरे लोग भी हँसने लगे। किसान ने रामधन से कहा– हाँ, सर्दी तो जरूर लग रही होगी। अगर तुम्हें अपने पिता की इतनी चिन्ता है तो ये चारों कम्बल मुझे दे दो। मैं उनके पास पहुँचा दूंगा।

पास बैठे साथियों ने भी कहा– हाँ भैया, किसान ठीक ही तो कह रहा है। कम्बल दे दो।

रामधन कुछ सोचने लगा। फिर बोला– तुम ठीक ही कहते हो। लो, कम्बल उन्हें दे देना। मेरी राम-राम कह देना। मैं फिर आकर मिल लूंगा।– कहते हुए उसने कम्बल दे दिये।

रामधन आगे बढ़ गया। उसके जाने के बाद किसान और उसके साथी उसकी बेवकूफी पर बड़ी देर तक हँसते रहे।

किसान के तीनों साथियों ने कहा– अब हमें चारों कम्बल आपस में बांट लेने चाहिए।

किसान लालची था। बोला– कम्बल तो मैं ही रखूंगा। मैंने ही अपनी होशियारी से उसे बुद्धू बनाया है।

किसान के साथी बहुत बिगड़े। उन्होंने गाँव में सभी को सारी बातें बता दीं।

महीनों बीत गये। खेत में गेहूँ की फसल पककर लहलहाने लगी। किसान का परिवार फसल काटने में जुटा हुआ था। एक दिन अचानक रामधन आ धमका।

किसान ने उसे पहचान लिया। हँसते हुए पूछा– कहो भैया, कैसे आना हुआ? तुम्हारे पिता खूब मजे में हैं। कम्बल ओढ़कर वह कुएं में आराम से सो रहे हैं। इस बार उन्हें क्या देने आए हो?

रामधन ने भोलेपन से उत्तर दिया– भैया, इस बार मैं कुछ देने नहीं, गेहूँ की आधी फसल और अपने पिता को वापस लेने आया हूँ।

किसान उसे देखता रह गया। बोला– आधी फसल! वह कैसे?

रामधन ने भोलेपन से कहा– भैया, मेरे पिता ने कड़ाके की सर्दी में ठिठुरते हुए बाल्टियों में पानी भरा था। उसी से फसल की सिंचाई हुई है। तुमने स्वयं यह बात कही थी। अब बताओ, मैं आधी फसल का हकदार हूँ न?

किसान यूं कहाँ मानने वाला था। वह रामधन को बुरा-भला कहने लगा। रामधन ने गाँव की पंचायत में शिकायत की।

किसान के तीनों साथियों ने सोचा– किसान को उसकी कुटिलता का पूरा मजा चखाना चाहिए। चारों कम्बल हथियाकर वह बड़ा होशियार बनता था।

पंचों ने पूरी बात सुनी। फिर रामधन से कहा– किसान ने तुमसे मजाक किया था। भला, कोई आदमी यह काम कर सकता है?

रामधन ने सहजता से उत्तर दिया।– मैं क्या जानूं? मैं ठहरा भोला-भाला। मेरे गाँव में ऐसे बढ़िया कुएं भी नहीं हैं। न ही मैंने कभी रहट चलता देखा। रही बात मजाक की। यह तो किसान को कम्बल हड़पते समय सोचना चाहिए था। मैंने तो इसकी बात सच्ची समझी, कम्बल दे दिये। अब मुझे न्याय मिलना चाहिए।

पंचों ने गवाही के लिए किसान के साथियों को बुलवाया। वे किसान से कुढ़ तो रहे ही थे। उन्होंने तुरन्त कहा– रामधन ठीक कहता है। किसान ने झूठ बोलकर इससे चार कम्बल लिये थे।

पंचों ने फैसला दिया।– रामधन को किसान ने झूठ बोलकर ठगा। अब उसे अपनी आधी फसल हरजाने में देनी पड़ेगी। साथ ही रामधन के पिता को भी ढूंढकर लाना पड़ेगा।

बेचारा किसान बगलें झांकने लगा। गाँव वालों के आगे उसकी एक न चल सकी। उसे आधी फसल रामधन को देनी पड़ी। मगर उसके पिता को वह कहाँ से ढूंढकर लाता। वह रामधन से बोला– भैया, आधी फसल ले चुके हो। अब तो माफ कर दो। बताओ, मैं तुम्हारे पिता को कहाँ से ढूंढकर लाऊँ? मैं तो उन्हें जानता भी नहीं। चाहो तो कुछ और जुर्माना ले लो।

यह सुनकर रामधन को हँसी आ गई। बोला– बस, हार गये। बड़े होशियार बनते थे। जाओ, माफ किया। मेरे पिता घर लौट आए हैं। याद रखो, फिर किसी को धोखा मत देना, वरना सारी फसल खो बैठोगे। जुर्माना अलग भरोगे।– कहता हुआ वह घर लौट आया।

# [illegible]

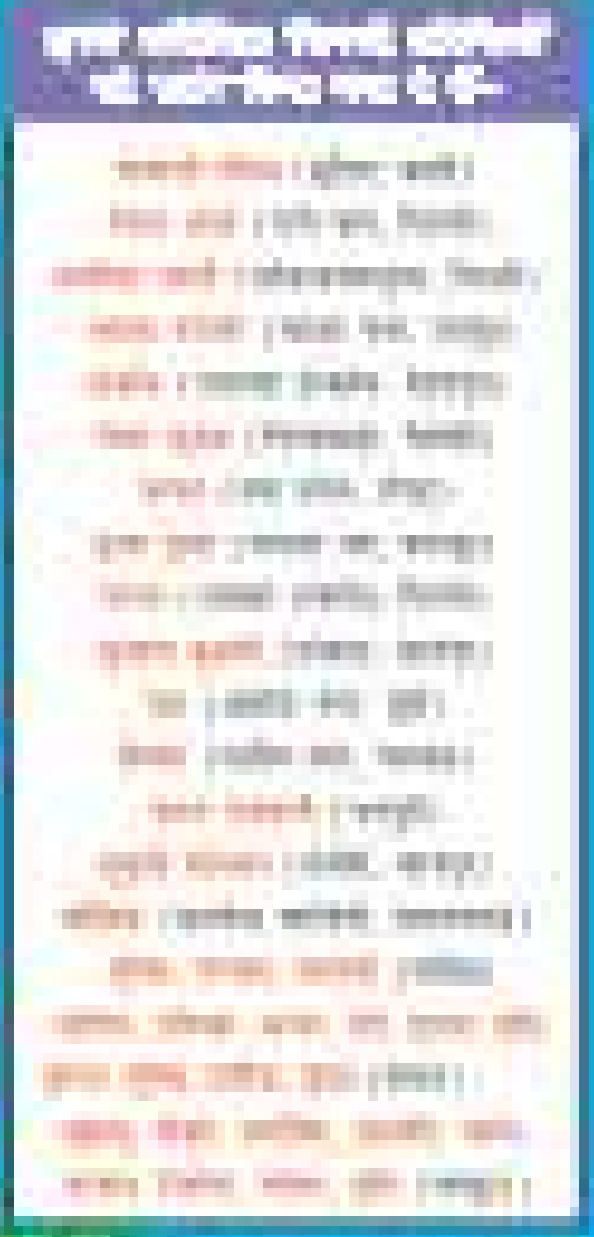

# रंग भरो

## शिक्षक दिवस

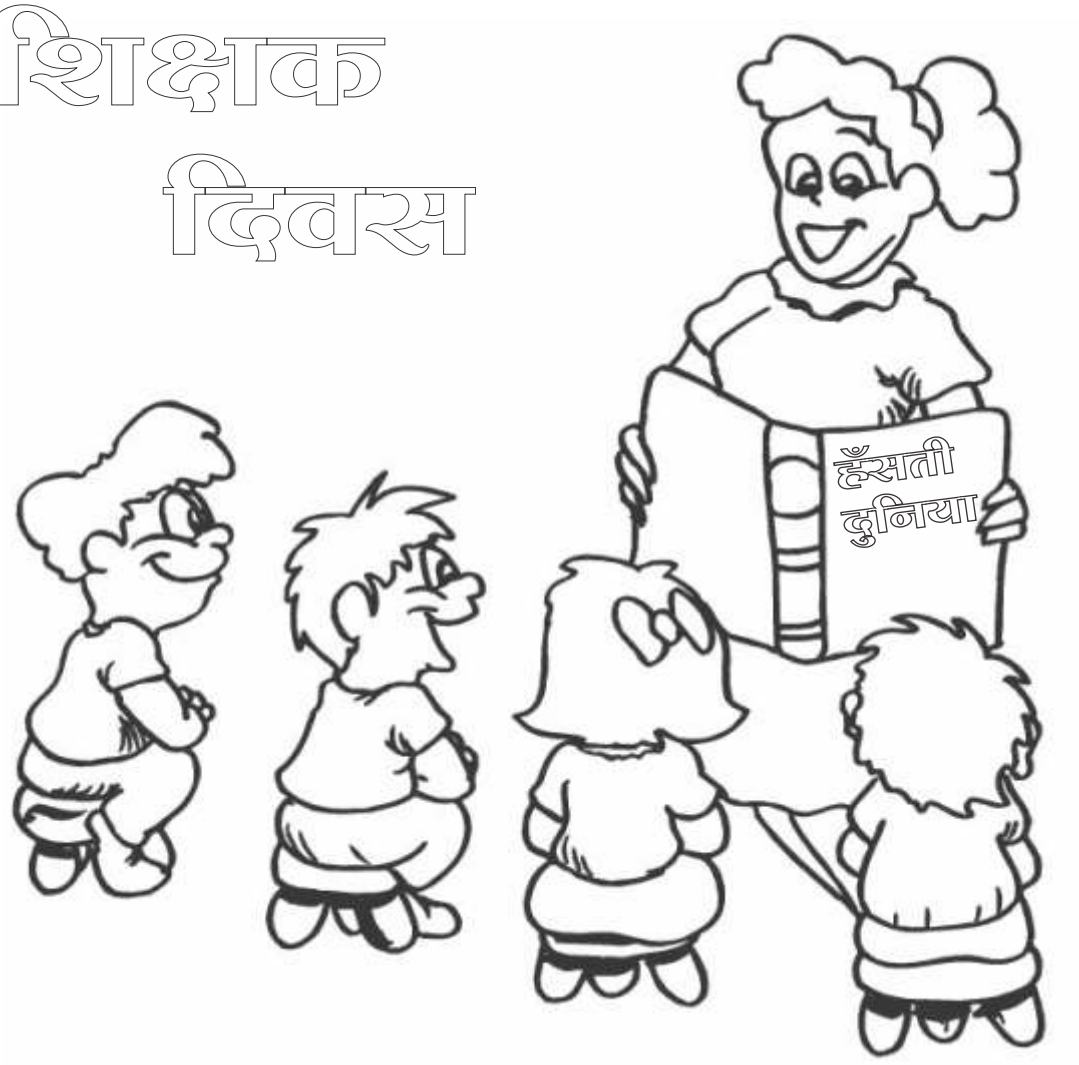


नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

# चन्द्रयान की चमक

चन्द्रयान की चमक से,
चकित हुआ जहान।
चाँद के सफर पर,
बढ़ चला चन्द्रयान।

पृथ्वी की कक्षा में,
लगा रहा चक्कर।
चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर,
उतरेगा चन्द्रयान।

चन्द्रमा की सतह से,
थोड़ी ऊँचाई पर।
आर्बिटर से अलग,
हो जायेगा लैन्डर।

कैसा है हमारे,
चन्द्रमा का वातावरण।
लैन्डर से अलग होकर,
यह जानेगा रोवर।

चन्द्रयान से बढ़ेगा,
अन्तरिक्ष ज्ञान।
मानव मून मिशन का,
फिर चलेगा अभियान।

देश के वैज्ञानिकों ने,
बढ़ाया मान देश का।
अन्तरिक्ष में भारत की,
अब है निराली शान।

प्रस्तुति : हरजीत निषाद

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। जुलाई माह की पत्रिका प्राप्त हुई। आवरण पृष्ठ पर बच्चों को बरसात में हँसते-खेलते देखकर मन पुलकित (रोमांचित) हो उठा।

इसके सभी प्रेरक-प्रसंग प्रेरक एवं शिक्षाप्रद हैं।

कविताएं 'अच्छी लगती है बरसात' और 'बरखा रानी' अच्छी लगीं।

यह पत्रिका बच्चों के लिए शिक्षाप्रद एवं अनमोल तोहफा है। – सौरभ कुमार ( माधौगंज, हरदोई )

हँसती दुनिया में प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री शिक्षाप्रद होती है। यह बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

इस पत्रिका की हर एक कहानी जहाँ बच्चों का मार्गदर्शन करती है, वहीं बड़ों को भी प्रेरणा देती है।

मैं प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि यह बच्चों का भविष्य में भी इसी तरह मार्गदर्शन करती रहे।

– विक्रम सिंह पाल

हँसती दुनिया का जुलाई अंक पढ़ा। सबसे पहले लेख में हमें समय की कद्र करना और समय पर हर काम करना समझाया है तथा पढ़-लिखकर आगे बढ़ना और देश का नाम रोशन करने को सरलता से समझाया है। कहानियों में 'कितने पारस' और 'भ्रम' पसन्द आई। बरसाती मौसम में 'अजब अनोखे मेढक' लेख भी पसन्द आया। लेख 'मछलियों का अद्‌भुत संसार' भी जानकारी भरपूर था।

– श्याम बिल्दानी ( बड़नेरा )

Kids
Spiritual Zone For Kids

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

# निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

| हँसती दुनिया | सन्त निरंकारी | एक नज़र |
|---|---|---|
| (चार भाषाओं में) | (ग्यारह भाषाओं में) | (तीन भाषाओं में) |

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

**Sant Nirankari Satsang Bhawan**
**1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)**
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

## अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

**TAMIL**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

**ORIYA**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

**TELUGU**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

**GUJRATI**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph 22-24102047

**KANNADA**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph 080-26577212

**BANGLA**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)